दो० ॥ रामचरणमनपानकरु उठतीसप्ततरंग ॥ नामनिरूपणरामको निर्णयब्रह्मप्रसंग ७ जो प्रकरण श्रीगुसाईंजी कहते हैं ताके पूर्वही ताको स्वरूप कहतेहैं ताके मध्यमें ताको अंगकहतेहैं ताकेअन्तमेंमाहात्म्यकहतेहैं ऐसेही सबसदकाव्यन में जानिलेब अब रामनाम को बन्दते हैं मन बचनकर्म अभिनिवेश बन्दनाकरि आये हैं अरु करते हैं बन्दौंनाम परमेश्वर के अनन्त नाम हैं तामें रामनाम बन्दौं परमेश्वर को कवन स्वरूप रघुबर तिनको नाम रघुबर क्यों कहा रामहीकहते तहां रामकहते चारिस्वरूप में बोधहोत है दुइस्वरूप में सामान्य बोध है दुइस्वरूप में विशेष बोधहोत है परशुराम बलराम जो परशुकहिकै बलकहिकै रामकहैतब बोधहोत है ताते सामान्य बोधकही अरु

जो केवल रामहीकहै तौ रमणाद्राम इत्यादि अरु श्रीदाशरथी रामदुइ स्वरूप में विशेष बोधहोतहै जो केवल रामही कहै रघुबर न कहै तब शुष्काद्वैतमतबादी अपनैमत सिद्धिकरैं हठकरिकै ताते गुसाईंजी रघुवर को नाम रामकहा परमेश्वरकेअनन्तनामहैं रामहीनाम क्यों वन्दे तहां जो आत्मा को नामस्कारकियो सो शरीर को करिचुक्यो तहां परमेश्वर के अनन्त नाम हैं तिनसवनकोआत्मा रामनाम है पर परमेश्वर के सबनाम नित्य परंपददाताहैं इहां शरीर शरीरी नित्य अखण्ड है एकही तत्त्व है पर रामनाम सर्बोपर है काहेते रामनाम में पंच पदार्थ प्रसिद्ध है रेफरेफ की अकार अरु दीर्घ अकार अरु मकार की अकार हलमकार यहपांचहू बिना एकौअक्षर नाममन्त्र इत्यादिक नहीं सिद्धिहोते हैं यह विचारिलेव शास्त्रन में ताते राम नाम बड़ोहै तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं पार्वतींप्रतिश्लोकद्वै परमेश्वरनामानि संत्यनेकानिपार्वति परन्तुरामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमः १ नारायणादिनामानि कीर्त्तितानिवहून्यपि आत्मातेषांतुसर्वेषां रामनामप्रकाशकः २ पुनि रामनाम कैसो है हेतुकृशानुभानुहिमकर को जहां एकशब्द में दुइअर्थहोइँ तीनि चार पाँच छः सात इत्यादिकअर्थहोइँ आशयलिहे एकशब्द में ताको श्लेषालंकारकही पुनि ध्वन्यात्मक काव्यकही यह चौपाई में अनेकहेतु अनेक ध्वनि अनेक आशयहैं निजमति अनुसार एकदुइ में भी कहतहौं हेतुकहे प्रिय पुनि हेतुकहे कारण पुनि हिमकरकहे जो हिम है पाला ताको उत्पन्नकरै ताकोहिमकर कही सो चन्द्रमा अरु हिमऋतु अगहन पूष इनको हिमकर कही दृष्टांत हिमऋतु जो हिमकर है तहां कृशानु भानु हेतु कही प्रियहै काहेते प्रिय है जेते सर्बजीवभूतहैं तिनकी देहको हिमऋतु में जाड़ दुःखदेत है ताको अग्नि सूर्य निवारणकरिदेतेहैं ताते प्रियहै अब दृष्टांतइहां उपमेय लुप्तालंकारहै सो कहते हैं दुइमास कौन हैं मयमोर तोर तैं मैं इत्यादिक द्वैत तामें जड़ताजाड़ विषमउरलागा उड़तानाम अज्ञानरूप जाड़ सो सबके अन्तष्करण में लगिरह्योहै दुखदेतहै तहां रकार कृशानु अकार भानु जेहि के हृदय में प्रवेशतेभये तेहिके अन्तष्करणको जाड़रूप अज्ञान ताको नाश करतुहै तामें मकाररूपहै ताते हेतुनाम प्रिय है पुनि दूसरअर्थ हेतुकृशानु भानुहिमकरको हेतुकही कारण कारकृशनु को करण है अरु रकार में दीर्घअकार सो भानुको कारणहै मकार चन्द्रमाको कारण है तहां जो कोई कहै कि कारणकार्य को उत्पन्नकरिकै पुनि कार्य में लीनहोइजातुहै जैसे बीज ते तरुभयो पुनि बीज

चौ० ॥ बन्दौंनामरामरघुबरको हेतुकृशानुभानुहिमकरको १ विधिहरिहरमयवेदप्रानसे अगुणअनूपमगुणनिधानसे २ महामंत्र

तरुमें लीनभयो तैसे रामनाम ते कृशानु भानु शशि उत्पन्नभये इनहीमें रामनाम लीनभयो तहां ऐसो नहींहोइ है कारण दुइप्रकार को है एकसामान्य है एक विशेष है जैसे सोना को कारण एक कोई जरीबूटीपारा की खाक सो धातु में लीन ह्वैजातुहै तब सोना सिद्धहोत है सो सामान्य कारण है अरु पारस अतौलसोना करिदेतुहै आपु पूर्ण बनोरहेहैं सो विशेष कारण है तैसे रामनाम बिशेष कारण है अनेक अग्नि सूर्य चन्द्र उत्पन्नकरै आपु सदा पूर्णहै येतो ऐश्वर्य रामनामे कहिबेको कौनतात्पर्य है तहां ध्वनि है जब गुसाईंजी श्रीमद्रामचरित ग्रन्थकरिबे को प्रारम्भकीन्ह है जब एते वन्दना प्रथम करिआये हैं जब रामनाम बिषयआये तब कछुविचार कीन कि श्रीमद्रामचरित निर्विकार है अरु मेरी मति बिकारयुक्त है बिकार तीनि प्रकार के एक शुभकर्म एक अशुभकर्म एक अन्तष्करण की बासना यह तीनिकरिकै जीव आबृतहोइरह्यो है मति मलिन होइरही है अरु ताही मति सों रामचरित्र करिबे कोहै तहां कैसे बनैगो जो मेरीमति निर्मलहोइ तब निर्मल जो है रामचरित तब बरणौं काहेते देवतारूप होइकै तब देवता की पूजनकरै यह परंपराप्रमाण है देवोभूत्वादेवंयजेत्श्रुतिः तब बिचारकीन कि मेरी मति कैसे शीघ्र निर्मलहोइ तीर्थयज्ञदान जपतप योगज्ञान ध्यान समाधिइत्यादिककरौ पर एतेसाधन जब बहुतकालकरै जब सिद्धिहोइ तब शुद्धहोइ अथवा जन्मान्तर शुद्धहोइ किन्तु विघ्नहोइजाइ न सिद्धिहोइ अरु मोकोशीघ्र शुद्धताचाहिये तहां रामनाम तुरन्त शुद्ध करैगो काहेते कि हेतुकृशानुभानु हिमकरकोरकार अग्निको कारणहै तेहि पावकमें कौनशक्तिआई प्रकाशउष्णता दाहक विशेष है दृष्टान्त जैसे अग्नि में शुभसाकल्य घृत शक्कर तिल यव चावल मेवा छुहारादिकहुतिदेइ ताकीशुद्धताभस्मकरिकै आपनोस्वरूप करिदेतुहै अरु विकारहुतिदेइ तौ उसकी विकारता भस्मकरिके आपनोस्वरूप

करिदेतुहै देखियेतो जो कार्यमें येती शक्ति है तौ कोजानै कारणमें केती शक्ति होइगी अब दृष्टान्त कृशानुको कारण जोहै रकार तामें जो मनवाक्य अभिनिवेशभयो तहाँ शुभकर्म यज्ञादिकसो साकल्य है अरु अशुभकर्म बिकारलकरी इत्यादिक तहां रकार शुभाशुभ कर्म भस्मकरिकै पर तुरन्त आपनो स्वरूप को करिदेतु है अरुमध्यकी अकार भानुबीजहै तामें जो मन वाक्य अभिनिवेशहोइ तौ अंधकाररूप जो बासना सो तुरन्त नाशहोइजाइहै तहां रकारते अकारतेशुभकर्म अरु बासना नाशभई अब मकार क्योंबंदतेहैं तहां कृशानु अरु वैराग्य कै एककृपा है अरु भानुज्ञानकी एककृपा है काहेते कि वैराग्यतेसंसारकीराग जरिजातु है अरु ज्ञानते अज्ञान अन्धकार नाशहोतु है तहां रकार बैराग्य हेतु है अरु अकार ज्ञानहेतु है गुसाईं यह बिचारकीन किकृशानुभानु तेजोमय है अरु बैराग्यज्ञान तेजोमय है बैराग्यज्ञान में तेतअहं बैराग्यमान् ज्ञान में तेजब्रह्मास्मि अरुरकार अकारको तेजकोकहै अरु मेरीमतितौ निर्मलभई काहेते रकारते अरु अकारते कर्मशुभाशुभअरु बासनाध्वंस भई पर बैराग्यज्ञान तेजोमय है तहां जो मेरे हृदयमेंरकार अकार आयो कारणरूप तौ कार्य्यरूपतौ बैराग्यज्ञान भी आवैगोअरुतिसमें जो अहंपदहै तेजोमय सोभीआवैगो तब उद्वेग होइगो अरु मेरीमतिशांतिशीतलताको प्राप्तिहोइ तबरामचरित आवै तातेमकार जोहै चन्द्रहेतुअरु भक्तिहेतु ताकोबन्दौं जातेशीतलमतिहोइ जैसेकृशानुभानुकीतपनिचंद्रमाअपहरतु है तैसे रकार अकारमें जो है बैराग्यज्ञानतामें अहंजो हैं उष्णता ताको मकार जो भक्ति बीज सो हरतु है ताते रकार अकार मकार बंदिकै रामचरित कहौं जो कहौं कि चन्द्रमा तौ अपने शीत प्रकाश ते कृशानु भानुको प्रकाश मन्दकरिदेत है अरु सूर्य शशिके प्रकाशको मन्दकरिदेत है परस्पर बिरोध है तैसो रकार अकार मकार नहीं है दृष्टांत को एक देशलिया रकार अकार मकार ते अत्यन्त प्रीति है जैसे एकचन्द्रमणि होती है जो अग्नि के समीप धरिदेहु तौ अग्नि की उष्णता तौ हरिलेइ है अरु प्रकाश दोउनके बनोरहै है तहां रकार अकार मकारये तीनों बैराग्यज्ञान भक्ति के उपादान कारण हैं अरु कृशानु भानु हिमकर ताके निमित्त कारण हैं जैसे मृत्तिका घटको उपादान कारण है अरु कुम्हार निमित्त कारण है देखिये तौ तहां भूमि के एक देश ते अनेकघट होते हैं अरु एकहुकुम्हार अनेकघट बनायदेतु है तैसे श्रीरामनाम है ऐसे अनेक अर्थ रामनाम में हैं ताको बंदौं तहाँ प्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं श्लोकचारि रकारोनलबीजंस्याद्येसर्वेवाडवादय:कृत्वामनोमलंसर्वं भस्मकर्मशुभाशुभं १ अकारोभानुबीजंस्याद्वेदशास्त्र प्रकाशकः नाशयत्येवद्रीत्यायाबिद्याहृदयेतमः २ मकारश्चन्द्रबीजंचसदम्या-परिपूरणम् त्रितापंहरतेनित्यं शीतलत्वंकरोतिच ३ रकारहेतुवैराग्यं परमंयच्चकथ्यते अकारोज्ञानहेतुश्च मकारोभक्तिहेतुकं ४ जो कोईकहैकि रामनामको येताप्रताप जाके स्मरणकरत सन्ते बाह्यांतरतुरन्त शुद्ध होइ तहां प्रमाण है अगस्त्यसंहितायां अभिरामेतियन्नाम कीर्तितंविवशाच्चये तेपिध्वस्ताखिलाघौघा यांतिविष्णो:परंपदं रकार मकारको प्रभाव अमित है इत्यर्थः १ पुनि श्रीरामनाम कैसो है अब अङ्ग कहतहैं रामनाम बिधि हरिहरमय है मयकही तदात्मक को यह सेना मनुष्यमयहै यह ग्राम गृहमय है सूर्य प्रकाशमय है पटसूत्रमय है इत्यादिक रूप एकहीहै ताते तदात्मकमय कही पुनि मयकही बाहुल्य को यह मणिद्रव्य अन्नवस्त्र गज तुरङ्ग इत्यादिमय है ये पण्डित बिद्यामय हैं ये सन्त दिव्य गुणमय हैं कुवेर धनमय है भूमिबीजमय है इत्यादिकन के स्वरूप गुणभिन्न हैं ताते बाहुल्य कही ऐसेही रामनाम विधि जो है ब्रह्मा हरिजो है बिष्णु हर जो है महादेव तिनमय रामनाम तदात्मक मय है अरु बाहुल्यमय है जब गुणन ते परे तिनहुरूप है तब तदात्मक मय है जबगुणन को ग्रहणकियो तब बाहुल्यमयहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र की एक पाद बिभूति में अनन्त ब्रह्माण्ड है तहां ब्रह्माण्डप्रति ब्रह्मा विष्णु शिवहै ताते रामनाम विधि हरि हर बाहुल्यमय है क्रमालंकार करिकै जानब रकार बिधिमय अकार हरिमंयहै मकार हरमयहै ये तीनिहू रूप सूक्ष्मगुणन की साम्यता शुद्धरूप ॐकार में लक्षित होतेहैं तहां तदात्मकमयहै सो ॐकार मोक्षदाता है श्लोक एकपद श्रीभगवद्गीतायां औमित्येकाक्षरंब्रह्म ऐसो ॐकार रामनाम के अंशांश ते सिद्धिहोत है कैसेहोत है रकार में रेफ जो है सो ब्रह्ममय है अरु रकारमय अकार सो नादमयहै जाकोयोगीजन सुनते हैं महानाद जाको कही अरु बिन्दुमय हलमकारहै अरु जीवमय मकार की अकार है अरु वेद ब्याकरण इत्यादिक जेते स्वरहैं तेहिमय दीर्घ अकार है अरु जब प्रणवहोतभयो तब माया को कारण है ताते ये षट्तत्त्व करिकै रामनाम आबृत है तहां नादरूप जो अकारहै सो उकार होत है अर्द्धभागते वेद सूत्रकरिकै अरु मुनिन की बाक्यमें जहाँ आर्षबाणी है तहां ब्याकरण को प्रयोजन नहीं है केवल श्लोकहीके पदन ते

अर्थ सिद्धिहोतु है ताते इहां आर्षपदहै तहां नादरूप अकार उकार ह्वैकै अकार के पूर्व बिपर्यय ह्वैके प्राप्तिभई अकार उकार मिलिकै ओकारभयो हलमकार अनुस्वार भयो ॐकार सिद्धिभयो अरु मकार की अकार सवर्णीमानिकै नादरूप ॐकार में प्रवेशभयो अरु रेफअन्तरभूतभयो प्रणव सिद्धभयो अथवा ब्याकरण के सूत्रकरिकै रेफ की बिपर्ययह्वैकै अकार जो दोनों सो एकभयो ताके पूर्वह्वैकै रेफबिसर्गभयोबिसर्गकी उकारअकार मिलिकै औकार भयो हलमकार अनुस्वार भयो तब ॐकार सिद्धिभयो मकारकी अकार सवर्णी मानिकै नादरूप ॐकारमें प्रवेशभयो ॐकार सिद्धभयो तातेबिचारिलेव रामनामके अंशके अंशते बीज जो है अरु ॐकार जो है अरु सोऽहं जो है ये तीनिहूं सिद्धिहोते हैं ताते रामनाम विधिहरिहरमय है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिवबाक्यंश्लोक (१२) अंशांशैरामनामश्चत्रयः सिद्धाभवन्तिहिबीजमोंकारसोऽहंचसूत्रमुक्तइतिश्रुतिः १ रामनाममहाविद्ये षड्भिवस्तुभिरावृतं ब्रह्मजीवमहानादै स्त्रिभिरन्यद्वदामिते २ स्वरेणबिन्दुनाचैव दिव्ययासाययापिच पृथक्तेनविभागेन सांप्रतंश्रृणुपार्वति ३ परब्रह्ममयोरेफो जीवोकारश्चमश्चयः रस्याकारोमयोनादः रायादीर्घास्वरामया ४ मकारम्व्यजनन्बिन्दु हेतुःप्रणवमायया अर्द्धभागादुकारस्यद्वकारोनादरूपिणः ५ रकार गुरुएकार स्तथावर्णविपर्य्ययः मकारम्व्यजनञ्चैव प्रणवञ्चाभिधीयते ६ मस्यासबर्णितंमत्वा प्रणवेनारूपधृक अन्तर्भूतोभवेद्रेफः प्रणवेसिद्धिरूपिणी ७ वेदेव्याकरणेचैव येचवर्णास्वरास्मृताः रामनाम्नैवतेजाताः सर्वेषांनात्रसंशयः ८ अकारःप्रणवेसत्व मुकारश्चरजोगुणः तमोऽहलमकारस्यात्प्रयोहंकारमुद्भवः ९ प्रियेभगवतीरूपे त्रिविधोजायतेऽपिचविष्णुर्विधिरहंचैवत्रयोगुणविधारिणः (१०) ऐसेहीश्रुतिस्मृतिकहतुहैंश्लोक॥प्रणवंकेचिदाहुर्वैबीजंश्रेष्ठंतथापरे तत्वरामेतिबर्णाभ्यांसिद्धि-धमाप्नोतिमेमतं (११) महाशम्भुसंहितायां पुनिश्रुति। प्रणवंकेवलमकारोमकारअर्द्धमात्र सहितंतस्मात्प्रणवस्य चाकारस्य चोकारस्य चमकारस्यचार्द्धमात्रस्यच इत्यथर्बणेश्रुतिः (१२) अकारो प्रथमाक्षरोभवति उकारोद्वितीयाक्षरोभवति मकारस्तृतीयाक्षरोभवति अर्द्धमात्राचतुर्थाक्षरोभवति बिन्दुः पंचमाक्षरोभवतिनादः षष्ठाक्षरोभवति तारकत्त्वात्तारकोभवति तदेवरामेतितारकंब्रह्मत्वं विद्धीति श्रुतिः (१३) पुनिवेदप्राणसे पुनि रामनाम वेदके प्राण हैं जैसेशुद्धपंचतत्त्व मय ब्रह्माण्ड समष्ठीरूप है तैसे पंचतत्त्व के व्यकारमय अण्डकही शरीर है मनुष्यादिक विष्टीरूपहैं ताते अण्ड ब्रह्मांड दोऊ पंचतत्त्व वेष्ठित विग्रह है तिनके पंचप्राण हैं प्राण अपान उदान व्यानसमान येते पंचप्राण शुद्धरूप विराटमेंहैं अरु पंचप्राणके पंचव्यकाररूप प्राणसोई मनुष्यादिकन में हैं तैसे वेदनके प्राण दिव्यरूप रामनाम है वेदको मूल एक ॐकार ताते वेद चारि पुनि पांच साम यजुर अथर्वण ऋग् सुस्म महाभारतादि पांचहू वेदके जो अक्षर सो स्थूल विग्रहजानिये अरु पांचहू को सिद्धान्त अर्थ जो है सोई पंचप्राण राम है रेफरेफ की अकार दीर्घअकार हलमकार मकार की अकार ये पांचोवेदके प्राण हैं जैसे प्राण स्थूल शरीर को त्यागिदियो तव शरीर मृतकभई तैसे जेहि वेदस्मृतिपुराण इत्यादिक सूत्रऋचा श्लोक पद अक्षरनमें रेफ विसर्ग अकार हल मकार अनुस्वार न होइ ते सव मृतकरूप ह्वै जाइ अरु वेदको सिद्धान्तजो है एकतत्त्व तेहिमय है रामनाम ताते वेदप्राण से कहा श्लोक राम नाम्नः समुत्पन्नः प्रणवोमोक्षदायकः रूपंतत्त्वमसेश्वासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः पुनि रामनाम कैसो है अगुणकही निर्गुण है अनूपम जाकी उपमा को कछु नहीं है अरु अनेक गुणके निधानकहे स्थानहै किन्तु अगुण जोब्रह्म है अनूपम ताको गुणकहे प्रत्यक्ष करिवे को निधान है रामनाम

जेहिजपतमहेशू काशीमुक्तिहेतुउपदेशू ३ महिमाजासुजानगणराऊ प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ ४ जानआदिकबिनामप्रतापू भयउ

अथवा अगुण अनूपम सात्विक राजस तामस ये जो तीनिगुण हैं ताकेपरे जेगुण हैं योगवैराग्य ज्ञान शांति शील दया क्षमा करुणादिक ये ते गुण अगुण है अनूपम हैं मुक्ति उपहित आत्मा के गुण हैं प्रकृतिके गुणनहीं हैं तिनगुणन को निधान है रामनाम जैसे धनको निधान कुवेर है किंतु अगुण अनूपम जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके अगुण अनूपमगुण हैं रामनाम जैसे पतङ्ग में गुण है ता करिकै पतङ्ग पाइयत है तहां गुण पतङ्ग को रूप भिन्न है रामनाम रामरूप अभिन्न है इहां दृष्टांतकोएकदेशलिया इत्यर्थः २ रामनाम महामन्त्रहु ते उत्तम है काहेते जाको महेश अहर्निशि जपते हैं अरु काशी में सर्वजीवनको मुक्तिहेतु उपदेशकरते हैं महेशकी साक्षी प्रथम क्यों दिया देव दानव

मनुष्यादिक सबन के पांच ईश्वर हैं अरु ऋषि मुनि योगी ज्ञानी ध्यानी समाधी वैष्णवसबमें अग्रणीय हैं महेश ताते जो महेश को सिद्धान्त सो तत्त्व सर्बोपरि जानिये प्रमाणभागवते॥ वैष्णवानांयथाशम्भुः। मनुस्मृतौश्लोकत्रयः सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रामकारकाः एकएवपरोमन्त्रो रामइत्यक्षरद्वयं १ हिरण्यगर्भ संहितायां ॥ श्रीरामेतिपरंमन्त्रं तदेवपरमंपदं तदेवतारकंबिद्धिजन्ममृत्युभयापहं २ काशीखण्डे । येयंयेयंश्रवणपुटके रामनामाभिरामं ध्येयंध्येयंमनसिसततंतारकंब्रह्मरूपं जल्पंजल्पंप्रकृतिविकृतौ प्राणिनांकर्णमूले वीथ्यांवीथ्यामटतिजटिलः कोपिकाशीनिवासी ३ पुनि रामनाम की महिमा गणेश जानते हैं जाके प्रताप ते प्रथम पूजाभई एकसमयमें श्रीशिवजूलोक मङ्गलार्थ गणेशकी पूजाकी इच्छाकीन तब सम्पूर्ण शिव के गण पूजा की सामग्रीही जहांतहां ते लिहे आवतेरहे तब स्वामिकार्तिक देखिकै बूझते भये तब सब समाचार दूतनके मुख ते सुन्यौ तब बिचारकीन कि शिवजू गणेश को क्यों पूजतेहैं अरु जो पिता पुत्रको अधिकार देत सन्ते पूजते हैं तौ वेदकी आज्ञा जेठेपुत्र को है सो हम बने हैं यह बिचारिकै षट्मुख शिव के पासगये शिवजी जानिगये तब शिवजीकहा हे महावीर षडानन तुम अरु गणेश ब्रह्मा के पासजाहु जाको ब्रह्मा पूजिदेहिं ताको सबपूजैं तब दोऊजन ब्रह्माके पासजाइकै सब कथाकहेतबब्रह्मैकहा दोऊजनसुनौ सामर्थी पूजाजातहै जो पृथ्वीकी प्रदक्षिणा प्रथम करिआवै ताकोपूजैं तब स्वामकार्तिक मयूरपरचढ़े गणेश मूषपरचढ़िचले तब मयूर आगे उड़िचलेउ मूषा पाछे रह्यौ तब नारदजी मिले गणेशको तब कहा हे गणेश तुम नहीं पहुंचोगे तुम जाहु ब्रह्मा की सभा में रामनाम लिखिकै प्रदक्षिणा करहु रामनाम अनेक ब्रह्माण्डको कारण है

शुद्धकरिउलटाजापू ५ सहसनामसमसुनिशिवबानी जपिजेईपियसंगभवानी ६ हरषेहेतुहेरिहरहीको कियभूषणतियभूषणतीको ७ स्वामकार्तिक जानि जाहिंगे तब गणेश वैसही कियो तहां जब स्वामकार्तिकचलेजाहिं मूषाके पगको अंकदेखतेजाहिं आश्चर्य मान्यो तब दुइदंड में षट्मुख सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकी प्रदक्षिणा करिआये ब्रह्माकीसभामें गणेशको बैठेदेखे आश्चर्य माने तब ब्रह्माते पूछतेभये कि गणेश प्रदक्षिणाको करिआये तब ब्रह्मै कहे तुमको कछु देखिपरउेहोइ तौ गणेशते बूझहु तबगणेशते बूझे गणेशकहा कि श्रीनारदजूके परदेशते हमने रामके नामकी प्रदक्षिणा कियोहै तब स्वामकार्तिक समुझिगये ब्रह्माकेपाछे आपुही तिलक कियो तब षण्मुख रामहीनाम आधारकियो इतिशैवतंत्रोक्ताः ४ आदिकवि श्रीबालमीकि जी नामको प्रताप जानते हैं मरामरा उलटानामजपिकै शुद्धस्वस्वरूप पर स्वरूपकी प्राप्तिभई ५ शिवजी भगवान् के सहस्रनाम श्लोकबद्धमेंकीन्ह तब पार्बतीजी बूझतीभईं कि हे महादेव यह जो सहस्रनाम आपुकीन्ह है ताके पाठकिये ते वड़ोमहत्फलहै तब शिवजीकहाकिहेप्रियाभगवान् के अपरसहस्र नाम उच्चारणकरैअरुरामनाम एकबारउच्चारणकरैसोतुल्यहैपाद्मेश्लोक ८ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे सहनामतातुल्यं रामनामबरानने १ पुनि हारितस्मृतौ चतुर्थ अध्याये। श्रीरामायनमोह्येतत्तारकंब्रह्मनामकं नाम्नांविश्रोस्सहश्राणां तुल्यएवमहा मनुः २ अनन्ताभगवन्मन्त्रा नानेनतुसमाकृताः श्रेयोरमणसामर्थ्यौ त्सौंदर्य्यगुणसागरात् ३ श्रीरामइतिनामेदं तस्याविष्णोः प्रकीर्त्तितम् रमाणान्नित्ययुक्तत्वा द्रामइत्यभिधीयते ४ एतदेवपरम्मत्र म्ब्रह्मरुद्रादिदेवताःऋषयश्चमहात्मानो मुक्ताजप्त्वाभवाम्बुधौ ५ एतन्मन्त्रमगस्त्योजप्त्वा रुद्रत्वमाप्नुयात् ब्रह्मत्वंकाश्यपोजप्त्वा कौशिकस्त्वमरेशताम् ६ कार्त्तिकेयोमनुश्चैव इन्द्रार्कगिरिनारदाः बालखिल्यादिमुनयो देवतात्वंप्रपेदिरे ७ इममेवजपन्मंत्रंरुद्रस्त्रिपुरहारकः आद्यापिरुद्रः काश्यांतुसर्बेषांत्यक्तजीविनां ८ सो पार्वतीसुनतभईं सहस्रनामसम रामनामको प्रताप शिवकेमुखते सुनिकै पार्वती शिवकेसंग जपतभईं शिवसहस्रनाम पाठकरैं पार्वतीजीरामनाम जपत भईंकिन्तु जपिकैशिवके संग तब भोजनकरहिं ६ तवपार्वती के हृदयके हेतुकहीप्रीति हेरिकै हरहर्षे तबकियभूषण तियजेतीस्त्री ब्रह्मांडमेंहैं तिन सबनकेभूषणकीननाम सर्बोपरिबड़ाई दन्हि अथवा यहजानि कै कि जबताईं सहस्रनाम जपतेहैं तवताईं पार्वती रामनाम सैकरनबारजपतीहैं ताते पार्वतीको भजन हमारे भजनते बहुतबढ़ेउ तबयहबिचारि

नामप्रभावजानिशिवनीके कालकूटफलदीन्हअमीके ८॥ दो० ॥ बरषाऋतुरघुपतिभगति तुलसीशालिसुदासरामनामबरबरण

कै किय भूषण तिय पार्बतीको अपने अङ्गको भूषणकीन्ह नाम अर्द्धांगीकीन जनुभजन मिलाइकै बांटिलीन आधा-आधा भूषण तिय को अरु पार्वती के भूषण शिव आपुहैं अथवा तियको जिन शिवके तियकी भूषणसपनेहु नहीं है काहेते शिवजी बिरक्त हैं ते शिव पार्बती को भूषणकीन्ह रामनाम में प्रीति जानिकै (७) रामनाम को प्रभाव शिवजी नीकीप्रकारजानते हैं काहेते जव क्षीरसमुद्र मथनभयो तब अनेक रत्न निकसे तहां बिषको घट निकस्यो ताकी ज्वाला ते सुर असुर इत्यादिक जरेजाहिं तवभगवान् शिवको प्रेरणा कियो तब शिवजी भगवान् आज्ञामानि सबको दुखित देखिकै रामनाम कहिकै बिष को घटपानकरिगये सो बिष सत्यअमीफल को दियो श्रीशिवजी सदा अविनाशी हैं अरु इंद्रादिक जो देवता ते अमृत पियो तदपि ते मन्वंतर प्रतिपतति होते हैं (८) जैमुनिपुराणे वेदव्यास वाक्यं श्लोक २ रामनाम परंब्रह्मसर्बवेदप्रपूजितं महेशएव जानाति नान्योजानातिवैमुने १ रामनामपरंस्वादु भेदज्ञारसनायजातंनामरसनेत्याहुर्मुनयः तत्त्वदर्शिभिः ॥ दोहार्थ ॥ वर्षाऋतु रामभक्तिहै राम नाम बरनाम श्रेष्ठ जो दोऊवरण अक्षर हैं तहां रकार श्रावणमासहै मकारभादौंमास है देखिये ता दुइमासकरिकै ऋतु कहावै है तैसे राम दोऊअक्षर को सुमिरण सोई भक्ति कहावै है अरु बर्षाऋतु जो है सो शालि जोधान ताको विशेष पोषणकरतु है काहेते कि धानको केवल बर्षाऋतु में मेघहीको जल आधार है अपरजल सामान्य है अरु शीलसंज्ञा तो गेहूं यव इत्यादिक सबकी है ते सब कूप सर नदी के जल जो एकहूवार पावतेहैं तब होते हैं किंतु बिना जलहू ते होतेहैं कोई केवल भूमि की शरदतेकोई शीतपाइकै होते हैं इत्यादि तुलसी शालि सुदास सुष्टुदास जाके केवल रामनाम आधार है सोई धान है रामनाम श्रावण भादौंमास है रसना मेघ है उच्चारण करना सोई गर्जब है प्रेमजल है बुद्धिभूमि है जीव धान है अन्तष्करण संयुक्त अरु जिनके नेम जप तीर्थ व्रत दान योग वैराग्य ज्ञान इत्यादिक अरु नाम सबकी बराबरि भरोस है तो दास अपर शालिहै उरद मोठ जुवारि गेहूं यव चना मसूर इत्यादिकहैं ९ राम ये जो दोऊअक्षर सो मधुरहैं भक्तिरसमयहैंसबकोप्रियहैं अरु मनोहरमनको हरतहैं सुन्दरअतिशयहैं काहेते कि जेते भगवत्केनामहैं ते सबस्वरसंयुक्तहैं एऐओऔ अईऊऋऌइत्यादिस्वरहैं अथवा जो इनस्वरते रहितनामहै

युगसावनभादौंमास ९ ॥चौ०॥ आखरमधुरमनोहरदोऊ बरणबिलोचनजनजियजोऊ १० सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू लोकलाहुपरलोकनिबाहू ११ कहतसुनतसमुझतसुठिनीके रामलषणसमप्रियतुलसीके १२ बरणतबरणप्रीतिबिलगाती

केवलअकारहीस्वरहैतामेंछोटेवड़ेअक्षरहैं किंतुदुत्तअक्षरहैंअरुरामनामकेवलअकारयुक्तहैसोअकारस्वराधिपहै अरुदोऊअक्षरसमहैं तातेमनोहरनाम अतिसुन्दरहै दोऊअक्षर पुनिबरणजोहैं छत्तीसअक्षर जाकरिकै वेदस्मृति पुराण सबहैं तेहिसब वर्णनके नेत्रहैं रामनामविकहे बिशेषनेत्र हैं किन्तु बिनामदुइको दोऊनेत्रहैं मस्तकपर होते हैं तैसे रकारकीरेफ मकारहल अनुस्वार दोनों सब अक्षरनके माथेपर रहतेहैं अरु जनजोहै दास तिनके जीवकेनेत्र हैं रामस्वरूप देखिवेको जो जीवकेरामनाम नेत्रही हैं सोअन्धहै (१०) पुनि सुमिरतकै सुलभ है अपर नाम जो परमेश्वरके हैं ताकोपढ़ेहोइ तव शुद्धकहिआवै अरु राम सबते कहिआवैहै अरु सबकोसुखदाता है जेहिमोक्षको अनेकयत्न पण्डितजन करते हैं सोई मुक्तिराम नाम उच्चारण करतसंते होतु है ॥ श्लोक ॥ अगस्त्यसंहितायां ॥ श्रीरामेति बदन्बह्मभावमाप्नोत्यसंशयस्तत्वविद्यार्थिनोनित्यं रमंतेचित्सुखात्मनि (१) पुनिलोकलाहु उज्ज्वलयश अरु परलोक निवाहुनाम मोक्षदाता है (११) पुनि कहतसुनत समुझतसंते सुठिनीक है गोसाईं कहते हैं कि मोको तौरकाररामरूपही है अरु मकार लक्ष्मण रूपही है तातेरामलषणसम प्रिय हैं मोको (१२) वरणत वरणवरण जो दोऊ अक्षर तिनको भिन्नवरणौं तो प्रीति बिलगाइ जाती है काहेते बीच में औरअक्षरन परिजाइगो अरु रकार मकार दोऊ ब्रह्मजीवइवसहज संगी हैं जीवको अन्तर्य्यामी ब्रह्मअनादि एक संगीहै बद्धजीवते अरु नित्यजीवताईं कबहूं अलग नहीं है तैसे रामनाम है (१३) पुनि नरनारायणसम सरस सुष्टुभ्राता हैं कबहीं भिन्न नहींहोते हैं नरनारायण सम्पूर्ण ब्रह्माण्डको पालन करते हैं पर जम्बूद्वीप को अधिक पालन करते हैं तापरभरत खण्डको विशेष पालन करते हैं जैसे कोई राजा अपने समस्तराज्यकोपालन करतुहै पर अपने शहरकी रक्षा बहुत करै है अरु महलकी रक्षा विशेष करतु है तैसे

रामनाम सर्बजीवको रक्षकहै पर जे वेदवेत्ताहैं तिनकी अधिक रक्षा करत हैं पर जिनजन केवल रामहिनाम हृदयमें बसायो है तिनको त्रातानाम रक्षक हैं विशेष पालन करतु हैं (१४) भक्ति जोहै सोई सुन्दरि स्त्री है ताके दोऊकानके बिभूषण हैं सम्पूर्ण जगत्के हित

ब्रह्मजीवइवसहजसंघाती १३ नरनारायणसरससुभ्राता जगपालनबिशेषजनत्राता १४ भक्तिसुतियकलकरणबिभूषण जगहित हेतुबिमलबिधुपूषण १५ स्वादतोषसमसुगतिसुधाके कमठशेषसमधरवसुधाके १६ जनमनमंजुकंजमधुकरसे जीहयशोमति

कार को रकार बिमल पूषणकहे सूर्य है रकार एकरस उदयरहै है निर्दोषमातदिल है सदा उनसूर्य में अनेक दोष हैं तैसेही चन्द्रमा जानब मकार विमल चन्द्रमा है ॥ श्लोक॥ मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौमुनिहृदयवयः पक्षतीतीरभूमी संसाराषारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिंबौ उन्मीलत्पुण्य पुंजद्रुमललितदलेलोचनेचश्रुतीनां कामंरामेतिबर्णोसमि-हकलयतांसन्ततंसज्जनानाम् ॥ इति हनुमन्नाटके ॥ (१५) पुनि रामनाम स्वाद तोष सुधा के सम है स्वमति को रकार स्वादरूप है मकार सन्तोषरूप है मुक्तिको दृष्टांत जैसे अनेक पदार्थ मिष्टान्नादिकमें स्वादतो है पर सन्तोष नहीं है काहेते कि जो आजु सुष्टुभोजनकरै पर भोर को बासना स्वादकी बनीरहती हे अरु अमृत के पानकिये ते स्वाद तोष दोनों एकहीबार पूर्णहोत है पुनि चाहना नहींरहै तैसे कर्मयोग ज्ञान इत्यादिक के कियेते सुगतिको स्वाद तो है पर सन्तोष नहीं है काहेते धर्मीकी बासनाहै कि मैं इन्द्र ब्रह्मा होउं योगी की बासना है कि मैं काल को जीतिलेउं सदा चिरंजीव रहउं याही तन ते अरु ज्ञानीकी बासना है कि महीं ब्रह्म हौं तीनिहूं की कल्पनामात्र है अरु रामनाम के स्मराण ते सुगति को स्वाद तोषदोनों पूर्णहोते हैं एकहीबार पुनि मुक्ति कै चाहना नहीं रहै अपरकी का चली है अरु जैसे कमठशेष वसुधानामपृथ्वी को धरे है तैसे रामनाम दोऊ अक्षर बुद्धिमहिरूप जाबुद्धिमें रामनामआवै सोबुद्धि अचलहोइहै (१६) जनजो है दास तिनको मनकंज है मंजुकहीनिर्मल ताकेरस ग्रहण को रामनाम युगमधुर है पुनि जीभ श्रीयशोदाजी हैं रकारदीर्घसंयुक्त श्रीकृष्ण रूप है मकार हलधर रूप है बलदेव तौ जेठेहैं पाछे क्यों कहा रकार श्रीकृष्ण परब्रह्म हैंमकार हलधर शुद्धजीव है ताते क्रमहीते कहा जैसे श्रीयशोदाजी को मन वचन कर्म श्रीकृष्ण बलदेवते क्षणहुभरिनहीं भिन्न होइ तैलवत्धार मनवचन कर्म कै वृत्तिअखण्ड लगीरही एकरस तब श्रीकृष्ण बलभद्रकेलीला परमानन्द रसमय श्रीयशोदैजी जान्यो है तैसे जाकी रसना रामनाम एकरस अखण्ड तैलवत्धार स्मरण करती है सो रामनाम को सुख ब्रह्मानन्द परमानन्द रसमय ओही जानैगो जैसे गूंगा पदार्थ को स्वाद गूंगही जानैहैकहि नहिंसकै (१७) दोहार्थ एकछत्र है जो रकारमेरेफहै सो जलतुंबिका

हरिहलबरसे १७ ॥ दो० ॥ एकछत्रयकमुकुटमणि सबबरणन परजोउ। तुलसीरघुबरनामके बरणबिराजतदोउ १८ ॥चौ०॥ समुझतसरसनाम-अरुनामी प्रीतिपरस्परप्रभुअनुगामी १९॥ नामरूपद्वौईशउपाधी अकथअनादिसुसामुझिसाधी २०॥ को

के न्यायते सवअक्षरनके शीशपर दिव्यछत्ररूप शोभित है मकारहल मोनुस्वारः यहिसूत्रकरिकै मकार दिव्यमुकुटमणिवत् द्वौशोभित हैं अरु जोरेफ की आकार मकार की अकार दीर्घअकारताके आश्रयसब अक्षर हैं सोअकारराजा है। श्लोकद्वै॥ श्रीमन्महारामायणे। निर्वर्णंरामनामेदंकेवलंचस्वराधिपंमुकुटौछत्रसर्वेषांमकारोरेफव्यंजनं १ अन्यच्च यन्नामसंसर्गबसाद्विवर्णौनष्टस्वरौमूर्द्ध्निगतौस्वराणांतद्रामपादौहृदयेनिधायदेहीकथंनोद्ध्वगतिं प्रयाति २। (१८) अब गुसाईंजी रामनाम अरु नामीकही बिग्रह परमदिव्यमूर्ति रामस्वरूप सो कहते हैं काहेते जो कोई कहै कि गुसाईं जी नामाकाररहे हैं स्वरूपाकार अरु ब्रह्मज्ञान में सामान्यरहे हैं ताते नामनामीको प्रकरण कहते हैं तहां त्रैताप के उपासक सब हैं सावयवब्रह्म अरु निरावयवब्रह्म अरु शब्दब्रह्म नामतहां तीनिहू तत्त्व एकही है पर ध्यानज्ञानते नाम करिकै जीवको ब्रह्म परब्रह्म द्वौपरमेश्वरकै प्राप्तसुलभ आगे कहते हैं समुझत सरसनाम अरु नामी नाम अरु नामी जो स्वरूप सो समुझत सन्ते सरसकहे बरोबरि है अरु दोउनकी प्रीति परस्पर कैसी है जैसी प्रभु जो स्वामी की

प्रीति सेवकपर अरु सेवक की प्रीतिप्रभुपर है इहां ऐसो न जानवकि नाम नामी में को स्वामी है को सेवक है इहां प्रीति बरोवरि लीन्हहै सेवक स्वामी की॥ श्लोकार्द्ध॥ योमांपश्यतिसर्वत्र सर्वंचमयिपश्यति॥ भिन्नश्लोक॥ येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैव भजाम्यहं भगवद्गीतायां (१९) नामरूप द्वौईशउपाधी जो कही किनामअरुरूप ईशविषे उपाधि है ईश जो है सो नामरूप रहित है जबदेव महि गऊ ब्राह्मण सन्तजन को राक्षसन करिकै पीड़ाभई तबईश इनकेरक्षाकी उपाधिकरिकै रूपनाम को ग्रहण करत है जो यह अर्थकरिये तौ पूर्वापर विशेष होत है अरु शास्त्र को विशेष पूर्वापर है पूर्बापर विशेष अरुग्रन्थ कर्त्ता के मत में बिरोध होत है कैसे यहनाम प्रकरणमें पूर्वही स्वरूप को विशेष कीन्ह है वन्दौंरामनामरघुवरको रघुवर विशेषणकहा अरुद्विभुज धनुर्द्धर विशेष कहा और प्रकरण के परे में राम नाम विशेष कहा दोहा॥ रामचरित शतकोटिमहँ लियमहेश जियजानि गुसाईं को सिद्धांत श्रीरामनाम श्रीराम स्वरूप नित्य कैशोर धनुर्बाणधरे ताते जो नामरूप उपाधि मानिकै अर्थकरै तिनने रामायण की विषय नहींजान्यों ऐसोअर्थ इहां असिद्ध है अव यथार्थ सिद्धकरते हैं नामरूप द्वौ ईश के उपकही समीप को अधिकही प्राप्तिकरत है जो ईश को नाम स्मरणकरै किंतुईश के स्वरूप को ध्यान धरै ते द्वौईश जो परमात्मा के समीप जीव को प्राप्ति करै है इहां तौ बराबरि कहा आगे नाम के आधीन नामीकहैंगे काहेते इहां प्राप्तिहेतु है तामे सरल काठिन्यभेद है नामके स्मरण ते प्रीति संयुक्त ईश आपुही प्रत्यक्ष होतु है जीव के समीप अरु जो ईशके स्वरूप को ध्यानधरै तब ईश के समीप को जीवजाइकै प्राप्तिहोइ है पर ऐसी समाधि जबलगै जव चतुष्ट अन्तष्करणकै वृत्ति अरु वाह्य इन्द्रिन कै वृत्तिएकह्वैकै आत्मामें लय ह्वै जाहि तव अखण्ड तैलवत्धार समाधि स्थित होइ ईश के स्वरूप में जैसे विना पवन को दीपकी ज्योति नहींहलै जैसेचन्द्रमाकै प्रतिबिम्ब निर्मल जब थिररहै हलैनहीं तव चन्द्रमा को प्रतिविम्ब चन्द्रमा एकही देखिपरै है जैसे चितकीबेलि ऐसे जव अखण्डवृत्तिआत्मा की परमात्मा में निर्विकल्प समाधिलगै तब यह जीव देहछोंड़िकै ईश के उपकहे समीप अधिक है प्राप्ति होइ है सो कठिन है अरु जो नामजपै सनेह संयुक्त तव ईश आपुही आवतहै सहज में जैसे अपनेगुरु कोई पर्वत के परे रहते हैं अरु शिष्य के इच्छाभई कि गुरु के समीप को प्राप्तिहोउँ तहां बन नदी सर्प सिंह पहार चोर इत्यादिक करिकै पन्थ अगम है शिष्य की गम्य नहीं है अरु जो गुरु ने आपुही बिचारेउ शिष्यकोप्रेम तोशिष्य के घर आपुही आये काहेते सामर्थ हैं कृपालु हैं तवहू शिष्य गुरुके समीप को प्राप्तभयो तैसे नामकेजपते ईश आपुही आवतहै तव जीकीसमीपताभई अरु ईश के स्वरूपकोध्यान सोकठिन है काम क्रोध लोभ इत्यादिक नदी पर्वत सिंह सर्प इत्यादिक हैं ताते ध्यानमें अनेकवाधाहै जोकदाचित् निर्विघ्न निवहिजाइ तौ जीव ईशके समीप को जाइ है ताही ते नामकेआधीनस्वरूप कहैंगे अथवाव्यङ्गअर्थ है नामरूपद्वौ ईशकेउपाधी हैं ईशको नामजपै किन्तु रूप को ध्यान करै तव ईशको उपाधिहोती है तब ईश परधामको छोड़िकै चलो आवत है तहां नामरूप अनादि है अकथहै दोनोंकी गतिसुष्टु समुझिते साधतवनै है (२०) नामरूप दोनों वड़ छोट नहींकहाजाय है जो कहै तौ अपराध होत है नामरूपके गुणताकोसुनिकै गुणिकै जो भेदहोइगो सो प्रवीण साधुसमुझैंगे आगे जो व्यङ्ग्युक्ति है सो मैं कहत हौं (२१) देखिये तौ रूप जो है सो नामके आधीनहै मेरी समुझिमें कैसे जानिये जैसे कोई एक कहूंसेरभर अन्न के रोजगार को जात है तहां दैवयोगते कहूं एकरत्न मिल्यो पीतलाल इत्यादि रूप को ज्ञानतो भयो अरु नाम नहीं जान्यो है तहां सेरभरे अन्न की वासना

बड़छोटकहतअपराधू सुनिगुणभेदसमुझिहहिंसाधू २१ देखियरूपनामआधीना रूपज्ञाननहिंनामबिहीना २२ रूपबिशेष नामबिनुजाने करतलगतनपरतपहिचाने २३ सुमिरियनामरूपबिनुदेखे आवतहृदयसनेहविशेखे २४ नाम रूपगतिअकथ कहानी

नहीं मिटी तहां कोई प्रवीण ने नामवताइदियो यह तो जवाहिर है किन्तु हीरा है हजारन को माल है तव तुरन्त रत्न के रूप में निश्चय भई प्रीति भई सेरभरे की वासना नाशभई तुरन्त मनमेंराजाभयो तैसे नामजाने विनुरूप की प्राप्ति है अरु नहीं है अरु जव नामजान्यो तवस्वरूप रूप को गुणप्रताप सवै प्राप्तिहोते हैं किन्तु रूपको ज्ञानै नहीं

है जो नामते बिहीन है (२२) पुनि रूप विशेष जैसे रत्नहाथ में है पीतलाल इत्यादिक रूप को विशेष ज्ञान है अरु नामनहीं जानै तहां बस्तु यद्यपिकरतल में है तदपि नहीं पहिचानी जाइ है तैसेही रामनाम जानेबिना रामजी को स्वरूपगुण प्रताप परत्वलीला धामनहीं पहिचानो जात है (२३) अरु रूप नहीं देखिबे में आयो अरु स्नेहसंयुक्त नामको सुमिरण करतु है तो स्नेह की विशेषताते रूप हृदय में जरूर आवै है जैसे कोई एक सुन्दर बालक है ताकोरूप कछु दूरिते देखिकै मनमोहिगयो ध्यान बन्धिरह्यो है पुनि कछु आवरण परिगयो अरु ताबालकको मिलाचाहतहै अरु नामनहींजानै तहां जो कोई यत्नते आपुहिजाइ तब मिलाप में अतिसुख है तैसे रामनाम रामस्वरूप तहां भगवत् के कोई नामरूप होइऐसेहीजानिये (२४) नामरूप के जे अनन्त दिव्यगुण हैं तिनकै अकथकहतूति है समुझतसन्ते अतिसुखदाता है पर बखानिकैनहीं कहतबनै (२५) ब्रह्म के द्वैरूप हैं एकनिरावयव निर्गुणब्रह्म है अरुएकसावयवब्रह्महैजोतीनि गुणरहित परमदिव्य परमानन्दमय गुणजिनकोहै तिनकोसगुणब्रह्मकहीते दोऊब्रह्म के बीच में सुकही उत्तमसाक्षी है अरु चतुर द्विभाषिया है दोऊ ब्रह्म के स्वरूप में बोधकरिदेतु है जाकी जामें बासनाहोइ सो देखायदेत है ऐसो रामनाम है (२६) दोहार्थ॥ जैसे दीपक देहरीपर धरिदेइ तब भीतर बाहिर प्रकाशकरतु है पर दीपक पलमात्र न टरै तैसे रामनाम मणिदीपकहै जीभदेहरीरूप तापर धरिदेइ लवमात्र न टरै तब चित्त बुद्धि मन अहंकार चतुष्ट अन्तष्करण अरु बाहेर पांच ज्ञान इन्द्री पांचकर्म इन्द्रीइन दोउन के भीतर बाहेर की अविद्या अन्धकाररूप सो नाशह्वैजाइ है तब भीतर बाहेर श्रीरामचन्द्रही देखिपरै हैं श्लोक वाह्यांतरसुतीक्ष्णात्ररामचन्द्रप्रकाशते बाहेर भीतर नामहीके प्रकाश ते नामरूप देखिपरै है जैसे सूर्यही के प्रकाशते सूर्य देखिपरते हैं मणि दीप क्यों कहा अविद्यानाशकरिबे को जेते साधन हैं कर्म योग वैराग्य ज्ञानादिक सो दीपक हैं

समुझतसुखदनपरतबखानी २५ अगुणसगुणबिचनामसुशाषी उभयप्रबोधकचतुरदुभाष २६॥ दो०॥ रामनाममणिदीपधरु

काहेते येते उपाय ते सिद्ध हैं जैसे तेल बाती संयुक्त दीप सिद्धहोत है ताते उपाधि संयुक्त है ताते बाधा है पवनरूप लोभ रामरूप बड़ो पतङ्ग है अरु रामनाम मणिदीपक है अरु निरुपाय सिद्ध है ताते निरुपाधि है अरु जो अन्तर नाम सुमिरण करते हैं ते जीवन्मुक्तहोते हैं कैवल्यमुक्ति पावते हैं पर भक्तिको नहीं प्राप्त होते हैं अरु रामचन्द्र के स्वरूप को नहीं प्राप्त होहिं अरु जे जिह्वांतर में रामनाम जपते हैं तिनको जीवन्मुक्ति कैवल्य स्वाभाविकै अनइच्छित होत है तदुपरि पराभक्ति श्रीराम समीप को प्राप्ति होते हैं तहां प्रमाण है श्रीमन्हारामायणे शिववाक्यं श्लोक ६ रकारोमूर्द्धिसंचारस्त्रिकुट्याकारउच्यते मकारोधरयोर्मध्येलोमेलोमेप्रतिष्ठितं १ रकारोयोगिनांध्येयो गच्छन्ति परमंपदं अकारोज्ञातिनोध्येय स्ते सर्वेमोक्षरूपिणः २ पूर्णनामुदादासा ध्यायंत्यंचलमानसा प्राप्नुवन्तिपरांभक्तिं श्रीरामस्यसमीपकं ३ अन्तर्जपन्तियेनाम जीवन्मुक्ताभवन्तिते तेषांनजायतेभक्तिर्नचरामसमीपकाः ४ जिह्वयाप्यंतरेणैवरामनामजपन्तिये तेचप्रेमापराभक्त्यानित्यंरामसमीपकाः५ योगिनोज्ञानिनोभक्तास्सुकर्मनिरता श्चयेरामनाम्निरताः सर्वेरमुक्रीड़ातएववै (२७) नामकोजीभतेजपिकै योगीजनमोहरूपरात्रीमें जागते हैं बिरति जोवैराग्य ताकोभोर ह्वै कै बिरञ्चिके प्रपञ्चते बियोगनाम छूटि जाते हैं। श्लोकप्रमाणगीतायां १ यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्त्तिसंयमी यस्यांजागर्त्तिभूतानिसानिशापश्यतोमुनेः (२८) रामनाम जीभतेजपिकै योगीजन ब्रह्मसुख जो है अनूप ताको अनुभवैकहेप्राप्ति होते हैं ब्रह्म कैसो है अकथ है मन वाणी के परे है अनामय कही आमयकहे रोग सो षड्व्यकार है जायते उत्पन्नभयो बर्द्धते बढ़तभयो बिपरीयते मोटेते दूबरदूबरते मोटे गौरते श्याम श्यामते गौरभयो क्षीयते दिनप्रति क्षीण होतजात है बृद्धते बूढ़ाभयो मृयते मृतकभयो येते षड्व्यकार पुनिषड्ऊर्मी क्षुधा पिपासा हर्षशोक सुखदुःख येते आमय ताते आत्मारहित है एकरस है आत्मानाम रूपरहितहै पर नामहीते आत्माको निरूपणहोत है ताते प्राकृतिनाम रूपरहित है आत्माब्रह्म तेहिके नामरूप परमदिब्य है ताते अनामयरूप कहेहैं ऐसोजो है आत्माब्रह्म ताको नामहीते जानते हैं ते ब्रह्मसुख को प्राप्त होते हैं ब्रह्मसुख अनूप है (२९) श्रीरामभक्त चारिप्र-

जीहदेहरीद्वार तुलसीभीतरबाहिरहुजोचाहसिउजिआर २७ नामजीहजपिजागहिंजोगीबिरतिबिरञ्चिप्रपञ्च बियोगी २८ ब्रह्म सुखहिंअनुभवहिअनूपा अकथअनामयनामनरूपा २९ जाना चहैंगूढ़गतिजेऊ नाम जीहजपिजानहिंतेऊ ३० साधकनामजपहिं

कारके हैं एक जिज्ञासू हैं जो गूढ़गति हैं गूढ़गतिकही परमात्मा परमतत्त्वजो हैं श्रीरामचन्द्र जी तिनकी प्रसन्नता केहि प्रकार ते होइ सो जाना चाहते हैं किन्तु गूढ़तत्त्व स्वरूप तेऊनाम को जीभ में जपिकै जानते हैं (३०) अरु एकसाधक हैं नाम को जपिकै बासना जो अणिमादिक सिद्धिन की है सो भी प्राप्त होती है सिद्धिन के नाम रूप क्रिया फल कहते हैं सिद्धिन के नाम अणिमा महिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाश्यं इशिता बसिता अवस्पति ये आठो भगवत्प्रधान हैं भगवान् विषय स्वाभाविकी हैं निरतिशय हैं अरु दशसिद्धी गुणसम्बंधी हैं अनूर्मिमत्तं दूरेश्रवणं दूरेदर्शनं मनोजवः कामरूपं परकायप्रवेशनंस्वच्छन्दमृत्युः देवानांसहक्रीड़ानुदर्शनं यथासंकल्पसंसिद्धिः आज्ञाअप्रतिहतागतिः (१०) पुनिपांच क्षुद्रसिद्धी हैं सो वर्णन करते हैं त्रिकालज्ञत्वं अद्वन्द्वपरचित्ताद्यभिज्ञता अग्न्यर्कांबुविषादीनां प्रतिष्टंभाः अपराजयः इतिपांच अब सिद्धिन को रूप कहते हैं अणिमा महिमा लघिमातीनि सिद्धि देह की हैं जिससिद्धि करिकै देहअणुरूपको धारण करै सो अणिमा सिद्धि कही १ जेहिसिद्धि करिकै देहस्थूल स्वरूप को प्राप्त होइ ताको महिमा सिद्धिकही २ जेहिसिद्धि करिकै देहलघुभाव को प्राप्तिहोई ताको लघिमा सिद्धि कही ३ जेहिसिद्धि करिकै सर्बप्राणमात्र तिनकी जो इन्द्रीतिन करिकै सहितइन्द्रिनके देवतारूप होइकै पर इन्द्रिन में प्रवेश करै ताकी प्राप्ति सिद्धि कही ४ जेहिकरिकै सुनिवे में आये इन्द्रादिकलोक अरु पृथ्वी के बिवरसप्तपातालादिक लोक अरु पर्वतन के विवरतिन करिकै टके देखने लायक जो पदार्थ तिनको जो भोगदर्शन की सामर्थ जिस करिकैहोइसोप्राकाश्य सिद्धिकही माया अरु माया के अंश उनको प्रेरणा करना माया की प्रेरणा ईश्वराधीन अरु अंशन की प्रेरणा जीवाधीन यह भेद जाननासो ईश्वरता सिद्धि कही ६ विषय भोग मोअंशग रहना ताको बसिता नाम सिद्धि कही ७ जेहि जेहि सुख की चाहना करै सो सो सुखकीसीमा प्रापतिहोइ ताको अवस्पतिनामे सिद्धिकही ८ जेहि करिकै क्षुधा पिपासादिक रहित ताकोनाम अनूर्मिमत्व सिद्धि कही ९ दूरिकीवस्तुदेखना ताको दूरिदर्शन नामे सिद्धि कही १० दूरिते सुनिपरै ताकोनामदूरि श्रवणं सिद्धि कही ११ मनकी बरावरि देह की गतिहोना ताकोनाम मनोजवः सिद्धि कही १२ जैसा रूपचा है तैसा धरिलेइ ताकोनामकाम रूप सिद्धिकही १३ पराईदेह में प्रवेशकरै ताकोनाम परकाय प्रवेशन नामेसिद्धिकही १४ स्वेच्छामृत्युहोई ताकोनाम स्वछन्दमृत्युसिद्धिकही १५ अप्सरन के संग में जो देवतन की क्रीड़ा प्राप्ति होना ताको देवानां सहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धिकही १६ जैसा संकल्प करै ताके अनुरूप पदार्थ की प्राप्ति होई ताकोनाम यथासंकल्प सिद्धिकही १७ जाकी आज्ञा निवारणनहोइताकोनाम आज्ञा अप्रतिहतागति सिद्धि कही १८ क्षुद्रसिद्धिपांच भूत भविष्यति वर्तमान जानना ताकोनाम त्रिकालज्ञ सिद्धि कही १ शीतउष्णकरिकै पराभव नहीं होना ताकोनाम अद्वन्द्व सिद्धिकही २ पर चित्तादिक की वस्तु जानना ताको पर चित्ताद्यभिज्ञता सिद्धिकही ३ अग्नि सूर्य्यजल विष इत्यादिक को थांभना ताकोनाम अग्न्यर्कांवुविषादीनां प्रतिष्टंभ सिद्धिकही ४ काहू करिकै पराजय न होइ ताको अपराजय सिद्धिकही ५ श्रीभगवद्वाक्यं अब सिद्धिन कै क्रियाफल मिलित कहते हैं भूत-सूक्ष्म जो पंचतन्मात्रा शब्दस्पर्श रूप रसगन्धतेहि विषय सूक्ष्मस्वरूपमेरोव्याप्त तेहि में धारण करै जो सूक्ष्ममन ताको मेरीअणिमा सिद्धिप्राप्ति होइ १ ज्ञानशक्ति है जाकी ऐसो जो महत्तत्त्व तामें जो मेरो रूपता में जो महत्तत्त्वाकार मनकरै ताको महिमा सिद्धिप्राप्ति होइ २ वायुआदि जो भूततिन के जो परिमाणु कही अतिसूक्ष्मरूप तिनमें जो मेरोरूप तिसमें चित्तलगावै जो योगी ताको लघिमा सिद्धिप्राप्ति होइ ३ सात्विक अहङ्कारमें जो मेरो रूपतामें जो मनको लगावै योगीप्राप्तिसिद्धि होइ ४ क्रियाशक्ति प्रधान है यामें ऐसा जो महत्तत्त्व तामें जो मेरोरूप तामें जो मनको लगावै योगीताको सर्वोपरि ऐसी जो प्राकाश्य सिद्धि ताकोप्राप्तिहोइ ५ त्रिगुणरूप जो मायाताको जो प्रेरककालरूप विष्णु तिसमें जो मनको लगावै तायोगीक्षेत्र बाह्यान्तर शरीरजीवक्षेत्रज्ञ इन दोनों की प्रेरणारूप इशिता सिद्धिप्राप्ति होइ ६ विराट् हिरण्यगर्भ कारणयेते तीनिउपाधि तिनउपाधिन से रहित जो नारायणकर तुरीयरूप अरु जिसको भगवान्शब्दकरिकै कहते हैं तारूप में जो योगीमनको लगावै ताको बसिता सिद्धिप्राप्ति होइ ७ निर्गुणब्रह्म जो मैं तारूप में जो योगीस्वच्छ मनको लगावै ताको परमानन्दरूप अवस्पति सिद्धि होई ८ इतिआठ पुनिदश गुण हेतुक सिद्धिकहते हैं श्वेतदीपके अधिपति सत्वगुणरूप धर्ममय जोभगवान्मय तिनमें मनलगावै जो योगी सो षड्मीरहितहोइ ताको अनूर्मिमत्व सिद्धि प्राप्तिहोइ १ षड्मीकेनाम क्षुधा १ पियास २ शोक ३ मोह ४ जन्म ५ मृत्यु ६ आकाशात्म जो प्राणसमष्टीरूप में तद्रूप जो मैं तामें मनकरिकै नादकर

चिंतवनकरै जोजीव सोजीव उस आकाश में प्राप्तिभई जोबिचित्रवाणी ताकोसुनैताकोदूरिश्रवणसिद्धिप्राप्तिहोइ २ व्यापक जो सूर्य्य तिनमें चक्षुकोमिलाइकै नेत्र में सूर्य्यको मिलाइकै ताउभय संयोगमें मेरोस्वरूप तेजमय ताको ध्यानकरै सो सम्पूर्णविश्वको देखै सूक्ष्मदृष्टी जो योगी सो दूरिदर्शन सिद्धि को प्राप्तिहोइ मन और देह ताकोसंगी जो प्राणते बिप्राणकरिकै सहित मन अरु देह ताको जो मेरेवायु रूपमें मुक्तकरै ताके प्रभावकरिकै जहांमनजाइ तहां देहभी जाइ ताको मनोजवः सिद्धि प्राप्तिहोइ ४ मनको उपादान कारणकरिकै जो पोषै ता दिकरूप इच्छाकरै सो सो मन रूपको प्राप्ति होइ ताको कामरूप सिद्धिप्राप्तिहोइ ५ जाजादेह में प्रवेशकरबेकी इच्छाकरै तातादेहमें जीवात्माकर चिन्तवनकरै तब अपनीदेह छोड़िकै प्राणहै प्रधानयामें ऐसो जोलिंगशरीर सो लिंगशरीर वाह्यवायु में प्रवेशकरिकै तिनमार्गकरिकै तेहि तेहि देहमें प्रवेशकरै ताको प्रवेश सिद्धि प्राप्तिहोइ दूनोंएड़ी करिकै गुदाको दाबै अरु प्राणको क्रमकरिकै हृदय उरस्थल कण्ठ मूर्द्धिन इनमें प्राण उपाधि करिकै सहित आत्माको चढ़ावै अरु चढ़ाइकै ब्रह्मरंध्रद्वार ते ब्रह्म को अथवा और अपेक्षितलोकनको मनकरिकै आत्मा पहुंचावै तब तनकर परित्यागकरै ताको स्वच्छन्द मृत्युसिद्धि प्राप्तिहोइ ७ देवतन के क्रीड़ामें बिहारकरबेकी इच्छाकरै मेरी मूर्त्तिरूप सुरसत्व ताको चिंतवन करै तो सत्वअंशतेभई जो देवतनकीस्त्री सो प्राप्तिहोतीहै बिमानसहिततताको देवानांसहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धिप्राप्तिहोइ ८ बिनासमयभी जिस किसी प्रकार बुद्धिकरिकै जो संकल्पकरै सत्यसंकल्पकरिकै जो मैं सत्यस्वरूप जो मैं मेरे में मनको लगावै जो योगी ताको यथासंकल्प संसिद्धि प्राप्तिहोइ ९ सब को नियंता स्वतन्त्र ऐसा जो मैं मेरे स्वभावको प्राप्तिभया जो योगी ताकीआज्ञाकहूं भंगन होइ जैसे मेरी आज्ञाभंगकहूं नहीं है ताकोआज्ञा अप्रतिहता सिद्धिप्राप्तिहोइ १० दशैवगुण हेतवः पांचसामान्य सिद्धि कही मेरी सामान्य भक्तिकरिकै शुद्धभया अंतष्करण जो योगी कर त्रिकालज्ञ जो ईश्वर तेहि में मन को लगावै आपनजन्म आपनमृत्युसहित त्रैकालकी बुद्धिप्राप्तिहोइ ताको त्रिकालज्ञत्वसिद्धिप्राप्तिहोइ १ उसी योगधारणाते अद्वन्द्व सिद्धि प्राप्तिहोइ २ इसीकरिकै पर चित्तादि कीवस्तुको जानना ताको पर चित्ताद्यभिज्ञता सिद्धिप्राप्तिहोइ ३ अग्न्यादिक जो भूत तेहिकी बाधाकरिकै रहित भगवान् ऐसो भगवान् तारूपमें जो योगी मनको लगाइ ताको अग्न्यादिक भूतकी बाधाकरै ताको अग्न्यर्काबुबिषादीनां प्रतिष्टंभ सिद्धि प्राप्तिहोइ ४ श्रीबत्सचक्रादिक जो अस्त्र अरुगरुड़ अरु ध्वजा आतपत्र व्यजन इनकरिकै शोभित मेरो अवतार तिन

लवलाये होहिंसिद्धअणिमादिकपाये ३१ जपहिंनामजनआरतभारी मिटैंकुसंकटहोहिं सुखारी ३२ रामभक्तजगचारिप्रकारा

अवतारन को सामान्य ध्यानकर्त्ता जो योगी ताको अपराजिता सिद्धिप्राप्तिहोइ इतिबीस तीनितेइससिद्धि जो हैं सो प्राप्तिहोइँ अरु अन्त्यमें मोक्षको प्राप्तिहोइ जो कोई रामनाम लयलगाइकै जीभते जपै लयकहीअतिप्रीति अरु सर्व बिस्मरण अरु मनवाणी एकह्वैजाइ श्लोक एक पूजा कोटिसमंस्तोत्रंस्तोत्रकोटिसमोजपं जापकोटिसमोध्यानं ध्यानकोटिसमोलयः (३१) अरु एक आरतभक्त है सुतबित्तदारा लोक में यशशरीर रक्षादिक हेतुसो भी प्राप्तिहोत है जैसे द्रौपदीगज सुग्रीव इत्यादिक कोई होइनाम को जपतसंते समस्त संकट मिटिजातु हैं सुखी होते हैं पुनि परमपद को प्राप्तहोते हैं इहां यहै आरतको तात्पर्य है अरु जो आरतप्रसन्न द्रीत्य प्रपन्न कहे हैं सो इहां तात्पर्य नहीं है (३२) पुनि एक श्री रामचन्द्र के ज्ञानी भक्त हैं अपने स्वस्वरूप के प्राप्ति अस सर्ब भूत में एकरस आत्मा दर्शित है ब्रह्मानन्दमें प्रसन्न है जिनकी आत्मा शान्तहोइ रही है ताको विशेष ज्ञानी कही तहां प्रमाण है श्रीभगवद्गीतायां ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति समः सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपराम् १ ऐसे जे ज्ञानी भक्त हैं तिनको भी नामही आधार है श्रीरामचन्द्रके भक्त चारिप्रकार के हैं आरत जिज्ञासू अर्थार्थी ज्ञानी चारिउ सुकृती हैं अनघ कहे पाप रहित हैं उदार कही मुक्ति के भागी हैं मुक्ति उपहित क्रिया है तामें तीनिसकामी हैं ये मुक्ति के अधिकारी हैं अरु ज्ञानी जीवन्मुक्त भक्तहैं (३३) चारिहू चतुरन को रामनामही आधार है पर चारिहूमें ज्ञानीभक्त श्रीरामचन्द्रको विशेष पियारे हैं काहेते केवल भक्ति ही विशेष है जिन ज्ञानिन के सोई श्री भगवद्गीता में श्रीभगवद्वाक्यं ॥श्लोक द्वै॥ चतुर्विधाभजंतेमांजनाः सुकृतिनोऽर्ज्जुन

आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभः १ तेपांज्ञानीनित्ययुक्त एकभक्तिविशिष्यते प्रियोहिज्ञानीनित्यर्थमहंसचममप्रियः २ (३४) चारिहु युगमें चारिहु वेद में रामनामहीके प्रभावते मुक्ति होती है परकलि में तौ विशेष ही है ताते अपर उपाय अधिकारई नहीं है श्लोक बाल्मीकीयेटीकायां॥ रामेतिवर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजंतुः कलौ युगेकल्मषमानुषाणामन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः (३५) दोहार्थ ॥ ज्ञानीभक्तसकल कामनाहीन हैं आरत जिज्ञासू अर्थार्थी इनते निर्बासिक है अथ-

सुकृतीचारिउअनघउदारा ३३ चहुंचतुरनकहँनामअधारा ज्ञानीप्रभुहिंबिशेषपियारा ३४ चहुंजगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ कलिविशेष नहिंआनउपाऊ ३५॥दो०॥ सकलकामनाहीनजेरामभक्तिरसलीन नाम सप्रेमपियूषनदजिनहिंकियोमनमीन ३६ चौ०॥ अगुणसगुणदुइब्रह्मस्वरूपा अकथअनादिअगाधअनूपा ३७ मोरेमत बड़नामदुहूतेकियजेइजगनिजबशनिजबूते ३८ प्रौढ़सुजनजनजानहिं जनकी कहौंप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ३९ एकदारुगतदेखियएकू पावकसमजगब्रह्मविवेकू ४० उभयअगमजग

वा अर्थ धर्म्म काम मोक्ष यह सव कामनाते हीन हैं अरु रामभक्ति रसमयलीन हैं रामनाम प्रेमसंयुक्त सोई अमृत को नद है तामें अपने मनको मीनकिये हैं तेज्ञानी श्रीरामचन्द्र को विशेष प्रिय हैं (३६) ब्रह्मकेदुइस्वरूप हैं एक निर्गुण एक सगुण ब्रह्मदोऊ अकथ अनादि अगाध अनूप हैं (३७) पर मेरेमत में नाम दोउनते बड़ो है जो नामदोऊ स्वरूपकोनिजवशकीन्ह निजवलते (३८) प्रौढ़कहे प्रवीणजन जे हैं ते जनके मनकी जानते हैं मैं अपने मनकी प्रतीति की प्रीतिकी रुचि कहत हौं यामें आशय है कि मैं समस्त प्रवीणनकी रुचि कहत हौं (३९) ब्रह्मको विचार दुइविधिको है जैसे पावक एकतौ दारुकहे लकड़ी में ब्याप्त है अरु एकअग्निप्रत्यक्ष देखिबे में आवै है जो कोई कहै कि अग्नि तौ लकरीकंडा इत्यादि की उपाधिते प्रत्यक्ष है नसुअग्नि को सूक्ष्मैरूप सिद्धान्त है दान में व्याप्त है तहां देखिये तौ समुद्र में बड़वानल अग्निनिरुपाधि स्वरूप मान् शोभित है ताते ब्रह्म के स्वरूपदुइ सनातन अखण्ड एकरस है एकनिरावयवब्रह्म एकसावयवब्रह्म द्वौको बिवेक बिवेकी जानते हैं (४०) उभयब्रह्मके स्वरूप अनेक साधनते अगम है अरु रामनामते सुगमहै दोऊ स्वरूपकी प्राप्तिकरिकै पुनि एकही देखिपरै है जैसे रवि अरु रवि को समूहतेज तहां रविशब्द अरु रवितेज अरु रविकी मूर्त्ति एकही है अरुभिन्नभी है तैसे श्रीरामस्वरूप परब्रह्म अरु रामरूप व्यापक ब्रह्म अरु राम नाम एकही है कथनमात्र भिन्न है तत्त्वएकही है ऐसेही ब्रह्मको बिवेकबिवेकमान जानते हैं नीकेप्रकारते निरावयवब्रह्म अरु सावयवब्रह्मदोनों को रामही कही कहो नामबड़रामते जो सवमें रमिरह्यो है ताते रामकही पुनि श्रीदशरथनन्दनराम जाको अति लावण्य सुन्दरस्वरूप चरण मुख इत्यादि प्रति अंग अंगमें परमहंस शुकसनकादि इत्यादि मुनीश्वररमे हैं ताते रामकही रामनामरामस्वरूप रामव्याप्त एकही है नामदोऊ स्वरूपते वड़कहे हैं सो केवल प्राप्तिदेशमें नतु दशरथनन्दने रामसो व्याप्त है रमि रहे हैं अरु दशरथनन्दनके स्वरूप अरु चरणमें परमहंसजे हैं अरु भक्तजन जेहैं ते सब रमे हैं तहां श्रीभागवत के टीका में प्रथम श्रीधरवाक्यं श्लोक ह्वै ॐनमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दाय

सुगमनामते कहौंनामबड़ब्रह्मरामते ४१ व्यापकएकब्रह्मअविनाशी सतचेतनघनआनँदराशी ४२ असप्रभुहृदयअछतअविकारी

भक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय १ अन्य च्चरम्यरूपार्णवेरामे मुनयोयंतपश्चरन् अतएवरमुक्रीड़ारमतेयच्चराचरे २ ताते एकही है केवल श्रीरामचन्द्र है द्वैषरूप ब्रह्म को कहना सो काहेते मुमुक्षु जीवन को परोक्ष प्रतक्ष ब्रह्म दूनोंकेप्राप्त रामनाम नामते कहते हैं सुगमते अरु नाम रूप साधन सिद्धिनहीं है सिद्धयैरूप है (४१) एकरूप ब्रह्मसर्वत्र व्याप्त है अविनाशी है ब्रह्मकहे बृहदअनं ब्रह्माण्डमें एकरस अखण्ड सम्पूर्ण जैसे आकाश सर्व व्याप्त सर्वते भिन्न पुनि सतरूप सतकहे एकरस कालरहित चेतनकहे जामें अविद्या कवहीं नहीं व्यापै है वह सबकी गतिको जानैहै वाकीगति कोई नहीं जानैहै अरु आनन्दकी राशि आनन्द कही माया के सुख दुख हर्ष शोक इत्यादि

सबते रहितहै सच्चिदानन्द घन घनकहे जेहि सच्चिदानन्द बिनुएक बारको अग्रभागहू भरिकहूं खाली नहींहै ताते घनकही (४२) असप्रभु अछत प्रसिद्ध ऐसो ब्रह्मजीव के अन्तरभूत ब्याप्त है जीव सूक्ष्महै जो सूर्य्यकी त्रिसरेणुकरोखा में जगमगाइ रहीहै तामें एक त्रिसरेणुको सैकराभाग होइ तामेंएकभाग ताहूते सूक्ष्महै जीव अरु तेही जीव के अन्तरभूत ब्रह्म व्याप्तहै अति सूक्ष्मतरहै अबिकारी कही षडब्यकार रहित सो कहि आये हैं पाछे तेहिते रहित है ब्रह्म कैसे जीव के अन्तरभूतब्रह्म ब्याप्त है जैसे कोई मिठाई पेड़ा इत्यादि तामेंरस है रसमें स्वाद है स्वाद में पुष्टी है यहदृष्टान्त है अब दृष्टान्त कहते हैं पेड़ास्थाने स्थूल शरीर रसस्थाने चित मन बुद्धि स्वादस्थाने जीव पुष्टी स्थाने ब्रह्म ऐसे ही फूल इत्यादिक दृष्टान्त हैं देखिये तो पेड़ा जो पदार्थ है अरु ताकोरस गत रसै होइजात है परस्वाद अरु पुष्टिता ये दूनों सर्ब्बकाल में मिले हैं एकरस है जैसे बीजान्तर बीज है जाते अंकुर उठत है तैसे जीव ब्रह्मसदा मिलि रहे हैं पर जग में सर्बजीव दुखित हैं काहेते यह जो पंचजनित देह है तामें अपनपौ मानिरह्यौ है आपने अन्तरभूत जो ब्रह्म है तेहिके बिनुजाने सर्ब जीव दुखकरिकै दीन होइरह्यो है जैसे मृगा अपने अन्तर कस्तूरी है बाहर ढूंढ़त है दुखित दीन है तैसे जेहिब्रह्मके जानेबिना सर्व जीव दीनदुखित है सो ब्रह्म सर्बब्यापी है परोक्ष है नहीं देखिपरै है (४३) जो नाम निरूपणकरै तो वहै ब्रह्म प्रत्यक्षहोइ देखिपरै नामनिरूपणका कहावै नामको निरूपण नामही की यतन ते होतहै जैसे रत्न के परखैते रत्नपरखोजातहै अपरद्रव्य के परखे रत्नकोज्ञान नहींहोतहै तैसे परमेश्वर के नाम जे अनन्त हैं तिन सब नामनको अर्थ समुझै सो निरूपण कहावै तहां रामनाममें रेफजोहै सो ब्रह्ममय तदात्मक है तहां नामनिरूपणमय कछु और कहाचा-

सकलजीवजगदीनदुखारी ४३ नामनिरूपणनामयतनते सो प्रकटतजिमिमोलरतनते ४४॥ * * *

हतहौं पर अतिगुप्त है कहिबेयोग्य नहीं है पर बिना कहे मोपै रहा नहीं जाइ तहां श्रीरामचन्द्रके नमस्कार करिकै कछु कहत है श्रीरामचन्द्र के नेत्रनको तेज अतिशय सोई ब्रह्म है सो रकारमें रेफ जोहै सो जानबअरु रेफकी अकार अतिशुद्ध नित्यजीव है अरु दीर्घअकार मुक्तजीव है अरु मकार की अकार स्वजीव है अरु तीनहुअकार एकही है ताते जीवतत्त्व एकही है अरु हलमकार तीनि शक्तिमय है एक आह्लादिनीएकविद्याएकअविद्यायेतीनिहूशक्ति हैं तहांआह्लादिनी अतिसूक्ष्मब्रह्मानन्दरूप विद्यामेंब्याप्त है अरु विद्याअविद्या में ब्याप्त है तहांनित्यजीव जेहैं श्रीरामचन्द्र के समीप सदा अखण्ड एकरस षडब्यकार रहित सच्चिदानंदरूपहै तिनके आह्लादिनी मय बिग्रह है आनन्दरूपही है अरु जीवपरमात्मा के सुखस्वादक सतस्वरूपहै चितचिद्रूपहीहै तहां आह्लादिनी अरु जीव अरु ब्यापकब्रह्म ये तीनिहूं तत्त्वकथनमात्रभिन्न हैं नतु सर्वकाल मय एकही हैं परधाममें ये तीनिहूं तत्त्व बिग्रहमान् हैं अरु ब्रह्मांड को समसूक्ष्मरूप तीनिहूं तत्त्व है जब भगवान् भागवत कै सेवाकरै किन्तु अखण्ड भजनकरै तब ये तीनिहूं तत्त्व स्थूलहोइ जातुहैं तब रामचन्द्र के समीप को प्राप्तहोतेहैं अरु मुक्तजीवन के तनविद्यामय हैं दुखसुखहर्ष शोक पाप पुण्य रहित हैं तैसेही सामान्य विद्यामय शरीर मुमुक्ष जीवन के हैं अपर जीवन के शरीर अविद्यामय हैं हर्ष शोक दुःख सुख भरे हैं अरु रामनाममें तीनि अकारजे हैं ते शुद्ध जीव तत्त्व हैं अरु अकार ईश्वरवाचकभी है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं श्लोकसाढ़े सातकरिकै जानब शृणुष्वपरमंगुह्यंयन्नजानंतिकेपिच केपिकेपिबिजानंति रामानुक्रोसमैवच १ तेजोरूपमयोरेफः श्रीरामविककंजयो कोटि सूर्य प्रकाशश्च परब्रह्मसमुच्यते २ सोपिसर्वेषुभूतेषुसहस्त्रारेप्रतिष्ठितः सर्वसाक्षीजगद्यापी नित्यंध्यायंतियोगिनः ३ परंब्रह्ममयोरेफः जीवोकारश्चमश्चयः चिद्वाचकोरकारस्यात्सद्वाच्याकारउच्यते ४ मकारानन्दकंवाच्यंसच्चिदानन्दमव्ययं ५ व्यञ्जनाच्चाक्षरोत्पत्तिरकाराद्ब्रह्मचाक्षरः रेफोनिरक्षरोब्रह्म सर्वब्यापीनिरञ्जनः ६ मकारंव्यञ्जनंचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी शक्तिह्लादिणीविद्या विद्यासूत्रात्मकःस्वयं ७ तहां श्रुतिः ॐयोवैश्रीरामचन्द्रः सएवलोचनाभाभातिसएवब्रह्मेतिसएवसाक्षी सएवचेतः केवलंनिर्गुणात्मकस्माम्मेलग्नं ८ इत्यथर्वणे उत्तरार्द्धेअर्द्धमात्रात्मिकोरामोब्रह्मानन्दैकविग्रहः इतिरामतापिनीश्लोक अन्यच्च नित्यकैवल्य मुक्तश्चमुमुक्षूबद्धपंचभिः अकारोनित्य कैवल्य मध्यमुक्तमुमुक्षणः १ मस्याकारोभवेद्बद्धो जीवतत्वंसनातनंईश्वररांशोकअणुर्नित्यंसच्चिदानन्दमव्ययम् २ रामनामनिरूपण अगम है जोमैं गुरुन करिकै पायों है तामें

चित्संज्ञाजनाइदियो है काहेते अतिगोपहै प्रवीण उपासक जानहिंगे ताते बहुतनहीं कहेउ अरु रामनिरूपण किसूके कहिवेयोग्यनहींहै अतिअपारहै मैं मतिमन्द काकहौं पर जो श्रीरामउपासक धनुर्वाणादि पंचसंस्कार संयुक्त परमात्मानन्य होहिंगे तिसको यहनाम निरूपणकी परमतत्त्व भासैगी अरु उनहींको फलीभूत होइगो जो सतगुरन के आश्रयहोय मन क्रम वचन ते मानदूरिकरिकै तवनाम निरूपण प्राप्तहोइगो तब सो ब्रह्म जो सबके अन्तर्भूत ब्याप्तहै सो नाम निरूपण प्रकटत है जैसे रत्नकेपरखेते मोल प्रकटतुहै परजवाहिरी जानै है यथार्थ रत्नकोमोल तैसे सतगुरु जानते हैं रामनाम विषय ब्रह्मको स्वरूप तहां नामरत्नहै ब्रह्ममोलहै जैसे एकरत्न दशहजारको है सो कहूं दशहजारको विकातभयो पुनि कहूंजाइ वहरत्न दशहजारदाम उसमें वनोहै सदा तैसे नाम में ब्रह्म सदाएकरस वनो है पुनि दूसर अर्थनाम निरूपण नाम यतनते एकनामको निरूपण है अरु एकनामकी यतनहै सो कहतेहैं श्रीनारदजू प्रह्लादको अरु वाल्मीकिको नामउपदेश कियोहै ब्रह्मादिको निरूपण संयुक्त नाम उपदेश कीनहै काहेते कि प्रह्लाद गर्भ में रहै तव जैसो रामनामको निरूपण श्रीनारदके मुखते सुन्योसो यथार्थनामको स्वरूप हृदयमों आयो काहेते एकहीवार के कहेआयो जब जीवगर्भ में रहत है तब याको सांख्यज्ञान होतहै अनेक जन्मकोज्ञानहोत है अरु जव गर्भते उत्पन्नभयो तब प्रसव पवनके बेगते ज्ञान भूलि जातहै तहां प्रह्लादको शुद्धदशामें नाम उपदेशभयो प्रसवको पवननहींलाग्यो ताते प्रह्लादकी वृत्ति रामनामाकार भई ब्रह्माकार अखण्डएक रस बाहेर भीतररामही देखिपरैं अन्तर्य्यामी रूप सो कथा प्रसिद्ध है। नृसिंहपुराणे प्रह्लादप्रतिवाक्यं ॥श्लोक॥ रामनामजपतांकुतोभयं सर्वतापशमनैकभेषजं पश्यतातममगात्रसन्निधौ पावकोपिसलिलायतेधुना १ देखियेतौ रामनाम निरूपण ते कोटिनविघ्न नाशभयो तत्काल ब्रह्म प्रकटतभयो अरु वाल्मीकिको यतनसंयुक्त रामनाम उपदेश किया है मरा मरा मरा प्रथमहिमकार उपदेशकियो पुनि रकारप्राप्तभयोकाहे ते मकार जीवतत्त्व है रकार ब्रह्मतत्त्व है ताते वाल्मीकिको प्रथम स्वस्वरूपकी शुद्धता उपदेशकियो काहेते वाल्मीकिजीकी प्रथम कछुमलिनवृत्ति रहै ताते प्रथम स्वस्वरूपहीके अधिकारी रहैं आगे परस्वरूप आपुहीप्राप्तहोयगो तव मरा मरा मरा जपतजपत कोईकाल में ब्रह्माकार वृत्तिभई ब्रह्म प्रत्यक्षभयो ताते सद्गुरुन करिकै रामनाम को निरूपण प्राप्तहोइहै अथवा यतन प्राप्तहोइ दोऊरीति एकहू में दृढ़प्रतीति धारना आवै

दो० ॥ निर्गुणतेयहिभांतिवड़ नामप्रभावअपार कहौंनाम बड़रामतेनिजबिचारअनुसार॥१॥

तव ब्रह्माप्रत्यक्ष होतहै विनाश्रमही जैसे रत्नको मोलनहीं जानोजाइनहीं देखिपरै रत्नके भीतर तौ रुपैया देखिपरै न तौ मोहर देखिपरै पर जे रत्नपारखी हैं तेई जानते हैं जो रत्न की कीमति है तिसको मोल जे रत्नपरिखैं तेई जानते हैं अथवा खरीदकरै सो रत्नकोमोलपावै तैसे राम नामको निरूपणजानै अथवा रामनाम रटनकरै प्रेमसमेत सर्ब तजिकैतैलवत्धार तव ब्रह्मस्वाभाविकै प्रत्यक्ष होइहै इत्यर्थः (४४) इतिश्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुपविध्वंसने वालकाण्डे रामनाम निरूपण ब्रह्मनिर्णयोनाम सप्तमस्तरङ्गः ७॥

दोहा॥ अष्टमउमँगतरंगमें आदिअन्तलोजानि। रामचरणसवतेपरे रामनामपहिंचानि ८॥ दोहार्थ॥ निर्गुणब्रह्म जोहै तेहिते नाम बड़ो है यहिभांतिते जो रीति पाछे कहिआये हैं काहे ते रामनाम को प्रताप अपार है पुनि श्रीरामचन्द्रसे नामको वड़ो कहत हौं अपनी मति के अनुसार आगे जो यह प्रकरण गुसाईंजी कहते हैं तामें समस्तलाड़रसकी बातै हैं अपर भूलिहूनजानव इहां व्यंग्यस्तुति करते हैं जाते रघुनाथजी तुरन्त प्रसन्नहोहिं देखियेतौ यहवात लौकिकहू में प्रसिद्ध है जैसे कोईराजाहै राजा के स्वरूपते राजाकेनाम को अधिकप्रताप वर्णन करै तव राजा प्रसन्न होतहै मन वचन कर्मते तव जिनने नामकी वड़ाई कियो ताको हाथी घोड़ा वस्त्र रत्न इत्यादिक भरिदेतहैं तैसे गुसाईंजी रामनाम को यथार्त्थ ऐश्वर्य्य वखानिकै वैराग्य ज्ञान नवधा प्रेमा पराभक्ति श्रीरामचन्द्रसे मांगिलीनि है अरु नामरूपको सिद्धांत एक ही है यह अष्टम तरङ्गमें यहैहै जो और अर्थ करिये तौ रसको अनरसहोइजाइगो ताते विवेकीजन जानहिंगे काहेते कि जो श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै किसूके पार आपुजाहिं किन्तु ध्यान में आवहिं तौ वहजीव कृतार्त्थहोइ

पर यह दोनों होना अगम है अरु जो रामनाम उच्चारणकरै कोईहोइ कैसहूंकरै कहूंरहैसो कृतार्थहोइहै यह ध्वनि यहि प्रकरणमें है तात्पर्य्य यहैहै (१) श्रीरामचन्द्र अपने भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहै ताको अर्थ जैसे नर जो मनुष्य पंचभूततनुधारी कोई बड़ोराजा तैसी लीला करतेभये किन्तु नरतनुधारी जो भक्तहैं तिनको संकट निवारणकीन है ताते नरतनुधारी कहा अरु जो कोई कहै कि तुम उपासनाको खैंचिकरिकै अर्थ करतेहौ गुसाईं तो यही कहा है चतुर्भुजभगवान् जाको नारायण कही बिष्णु कही सोई भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहे द्विभुजरूप दशरथकेगृहमें अवतारलीन किन्तु कोई कहै कि निर्गुण ब्रह्म जो सर्वव्यापकहै सो भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहै सो इहांदोनों अर्थ नहीं सिद्धि होत हैं काहेते तुलसी गुसाईं श्रीरामउपासकहै ताते गुसाईंको यहमत नहीं है काहेते जो कोई यास्वरूपको उपासक होइगो सोई सर्वोपरि मानैगो अरु जो अपरस्वरूप में पर्यवसानकरै किन्तु अपरस्वरूपही को अविर्भावतिरोभावकरै तौ वह उपासकहै नहींहै अरु श्रीतुलसीदासजी विशेष श्रीराम उपासक है अरुश्री बाल्मीकिको अवतार है भक्तमालमें कहा है जाकीकीर्त्ति भरतखंडमें पूरि रही है गुसाईंको मत श्रीरामद्विभुजधनुर्द्धर परात्पर हैं॥ तहांप्रमाण सनत्कुमार संहितायां श्रीवेदव्यासबाक्यं॥श्लोक॥ परात्परतरंतत्तवं सत्यानंदंचिदात्मकं मनसा शिरसानित्यं प्रणमामिरघूत्तमं १ पुनिनारदपंचरात्रे॥ आनंदोद्विबिधः प्रोक्तः मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तः परमात्मानराकृतिः २ पुनि भागवते श्रीधरवाक्यं॥ ॐनमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय ३ पुनि भागवतेशुकवाक्यं यस्यामलंमहिपदस्युयशोधुनापि गायन्तिपद्यमृषयोदिगमेंद्रपट्टं तन्नाकालवसुपालकिरीटयुष्टं पादाम्बुजंरघुपतेःशरणंप्रपद्ये ४ पुनिअन्यच्च असंभूता विराद्ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तथापरे ब्रह्मतेजोघनीभूतंवर्त्ततेजानकीपतेः ५ पुनि श्रुतिः प्रकृत्यासहितः श्यामःपीतवासाप्रभाकरः द्विभुजः कुण्डलीरत्न मालीधीरोधनुर्द्धरः देहीदेहबिभागोनस्यात्सच्चिदानंदबिग्रहः श्रीरामोपनिषद ६ पुनः श्रुतिः यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णु महेश्वराअपि जातामहाविष्णुर्यस्यदिव्य गुणाश्चसएवकार्य्यकारणयोः परः परम पुरुषोरामोदाशरथीवभूवइत्यथर्वणेउत्तराद्धे ७ पुनिबाल्मीकीयेलववाक्यं वेदवेद्येपरेपुंसिजातेदशरथात्मजे वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ८ वेदकरिके वेद्यकहीजानबे योग्य जो परमपुरुषहैं जो परमतत्त्व बेदांतको सारभूत सो दशरथ आत्मज साक्षात् हैं अरु श्रीमद्रामायण वेदकीआज्ञा है साक्षात् जोचतुर्भुजभगवान् किंतुबिराट् भगवान्किंतु अंतर्यामीब्रह्म अवतार श्रीरामचन्द्र होते तौ साक्षात्पद क्योंदेते अरुसाक्षात्कही ज्योंको त्यों होइ तातेनर देहधारी लीलाभक्तनहेतुबाललीला इत्यादिकलीलामात्रनर तनधरवकहा अरुश्री रामचन्द्र स्वरूप द्विभुज धनुर्द्धर अखंड एकरस सर्बोपर कार्य्यकारणके परेसो रामभक्तानुग्रहार्थ अवतीर्णभये जैसे कोई ऊंचेते नीचेको उतरिआवै

चौ०॥ रामभक्तहितनरतनुधारी सहिसंकटकियसाधुसुखारी २ नामसप्रेमजपतअनयासा भक्तहोहिंमुदमंगलबासा ३ ऋषिहित रामसुकेतुसुताकी सहितसेनसुतकीनबिबाकी ४ सहितदोषदुखदासदुराशा दलइनामजिमिरबिनिशिनाशा ५ रामएकतापस तियतारी नामकोटिखलकुमतिसुधारी ६ भंजेउरामआपुभवचापू भवभयभंजननामप्रतापू ७ दंडकवन प्रभु कीन्ह सोहावन जनमन अमितरामकियपावन ८ निशिचरनिकरदलेरघुनंदन नामसकलकलिकलुषविभंजन ९॥ दोहा॥ शवरीगीधसुसेवकन्ह सुगति दीन्हरघुनाथ नामउधारेअमितखल वेदबिदितगुणगाथ १०॥चौ०॥ रामसुकीटबिभीषणदोऊ राखेशरणजानसबकोऊ ११ नाम गरीबअनेकनिवाजे लोकबेदबरबिरदबिराजे १२ रामभालुकपिकटकबटोरा सेतुहेतु श्रमकीन्हनथोरा १३ नामलेतभवसिंधुसुखाहीं

साक्षात् इत्यर्थः श्रीरामचन्द्र संकटसहिकै साधुनको सुखी कीन्ह तहां यह अर्थ असिद्धहै काहेते कि दुःख सुख जीवको धर्म है काहेते जीवषट्बिकार संयुक्त है अरु परमात्मा षट्बिकाररहितरूपहै॥ तहांप्रमाण है॥ श्रीअध्यात्मरामायणे परशुरामवाक्यं श्रीरामंप्रति॥ श्लोकार्द्ध॥ षट्विकारैर्बिहितंरामंत्वद्रूपचिन्मयं ताते यह अर्थ है सहिसंकट

किये साधु सुखारी साधुन अनेक संकट सहेउ तिनके संकट श्रीरामचन्द्र आपु ग्रहणकीन्ह काहेते भक्तवत्सल हैं ताते दुष्टनको मारिकै संकट नाशकरिकैसुखीकरिदीन आगे व्यंग्यस्तुति के भावते दुइदोहाको अर्थ अक्षरार्थय जानव २ समिष्टी अर्थ श्रीरामचन्द्र समुद्र बांधिकै लङ्कार्जीतिकै श्रीअवध में आइकै निःकंटक राज्यकरते भये अरु रामसेवक जे हैं ते रामनाम ताको प्रेमते सुमिरते हैं तिनको भवसागर विना श्रम सूखिजात है सुजन अपने मनमें बिचार करिलेहिंगे (१६) अरु मोहरूप रावण सहित सहायजीति लेते हैं नामप्रतापते पुनि अपनेसुखमें आनन्दह्वैकै फिरते हैं रामनाम के प्रतापते (१७) निःकंटक भये हैं स्वप्नेहुशोच नहीं है (१८) ॥दोहार्थ॥ एकब्यापक सोरामअध्यात्मे॥ रमणाद्राम इत्यपि पुनि धनुषधारीराम अन्यच्च ॥श्लोक॥ रम्यरूपार्णवेरामे मुनयोः यन्तपश्चरन् इतिरामपदेनासौ परंब्रह्माभिधीयते १ ताते व्यापक रामरूप ब्रह्म अरु दाशरथीरामस्वरूप ब्रह्मते द्वौरूप एकहीब्रह्म हैं जैसे मणि अरु मणिको प्रकाश सूर्यसूर्य के निकटकोघन प्रकाश तैसे एकही ब्रह्म जान अरु मतबादते दुइभासते हैं ताते ब्रह्मराम द्वौते राम नाम वड़ो है यह कहिवे को हेतु यह है कि व्यापक ब्रह्म जो है सो शुद्ध विज्ञानकरिकै व्याप्तहोत है अरु किशोर विग्रह ब्रह्मसो प्रेमापराभक्ति करिकै प्राप्तहोत है पर विज्ञान प्रेमापराभक्ति कठिनते सिद्धिहोत है अरु रामनाम करिकै दोनों ब्रह्मरूप स्वरूप प्राप्त होते हैं पर विनाश्रमही ताते नामदोनों ते बड़ोहै पुनि रामनाम कैसो है वरदायक जो महादेव हैं तिनको वरदानदाता है वरदायककही जो शिवजू एकवरदानै दाता हैं और कुछ नहीं हैं पुनि बरदायककही एकबरदा है जिनके बरदा कहे एक वरदानै दाता है ताहीपर आरूढ़ सदारहते हैं दूसर वाहन हईनहीं हैं उत्तम वरदाता हैं व्यकारवर नहीं देते हैं पुनि एकसै लक्षको एककोटि होत है ऐसे एकसैकोटि श्रीमद्रामायण एक वाल्मीकिजी कीन्ह्यों है तव शिवके पासलैगये शिवजू को सुनावनेलगे तहां यहखवरित्रैलोक्यमें होत भई कि श्रीमद्रामायण कैलासपर होत है तहांइन्द्र वरुण कुवेर धर्मराज अग्नि पवन शशि वृहस्पति शुक्र अरुब्रह्मादिक सर्वदेवता अरु सनकादिक नारद इत्यादि ऋषि अरु सिद्धिजन अरु शारदा इत्यादिक शक्ति अरु व्यासशुकदेव अगस्त्य इत्यादिक अमितमुनीश्वर अरु सातहूंपातालनागलोकपिंगल वासुकीशेष अनंतइत्यादिक तीनिहूलोककेमहामहाजनकैलासको आवतेभये श्रीमद्रामायणकै दंडवत् कीन्ह शिवसंयुक्त शिवजीके आदरसे वैठते भये एकसंवत भरेमें विधिविधान संयुक्त श्रीमद्रामायण शतकोटि सुनतभये सुनिकैसमस्त सहितमहादेव परमानंदपरमसुख परमहर्ष को प्राप्त भये तवकीरामाकार वृत्तिभई तवसवके यह इच्छाभई कि श्रीमद्रामायण हमहूंकोमिलै तव महादेवसे सवहीप्रार्थना कीन्ह तवमहादेव प्रसन्नतासमेत शतकोटि रामायणके तीनभागकीन तेंतीसकोटि तेंतीसलाख तेंतीसहज़ार तीनसै तेंतीसश्लोक दशअक्षर ब्रह्मादिकनको दीन्ह सो स्वर्गको लैगये अरु उतने अनंतजो शेषजीहैं तिनकोदीन सोपातालको लैगये अरु उतने मुनिनको दीन्ह सो सातहूद्वीप नवखण्ड में वटिगयो वाकीरहिगयो दुइअक्षर रामनाम सो महादेव सवते मांगिलीन्ह हृदय में विचारिकै जो कोई कहै कि महेश तो ऐसा रामनाम दुइअक्षर लैलीन्ह तव रामायण शतकोटि अपरहै सो तव रामनाम रहितभयो ताते महेश न लीन्ह किन्तु दोऊअक्षर रामायण में रहे सो व्याप्त रहे किन्तु भिन्नरहेसो तीनि वांटा न करतवनै ताते महेश मांगिलीन्ह अव रामायण में रामनाम नहींरह्यो अरुजे शास्त्र काव्य इत्यादिक हैं तेविना रामनाम अंकितसव झूंठे हैं तहांदेवन मुनिन नागन कैसेलीन्ह यहसंदेश है सोसुनो रामायण यद्जोशब्द है ताकोअर्थ रामायण श्रीरामचन्द्र को अयनकहे स्थान है जहां सदा श्रीरामचन्द्र रहते हैं अरु जहां श्री रामस्वरूप विद्यमान

करहुविचारसुजनमनमाहीं १४ रामसकुलरणरावणमारा सीयसहितनिजपुरपगुधारा १५ राजारामअवधरजधानी गावतगुणसुरमुनि बरबानी १६ सेवकसुमिरतनामसप्रीती विनुश्रमप्रबलमोहदलजीती १७ फिरतसनेहमगनसुखअपने। नामप्रतापशोचनहिंसपने १८॥दो०॥ ब्रह्मरामतेनामवड़बरदायकबरदानि रामचरितशतकोटिमहँलियमहेशजियजानि १९॥चौ०॥ नामप्रतापशम्भुअविनाशी साजअमंगलमंगलराशी २० शुकसनकादिसाधुमुनियोगी नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी २१ नारदजानेउनामप्रतापू जगप्रियहरि

तहांनाम आपुहीबन्यो है अथवा रामायण रामनामही को अयन है ताते रामायण तौ रामनाम मय है तहां यह भेद है कि श्लोकन में स्वरसंधि बिभक्ति धातुक्रिया कर्म इत्यादिकन को रामनामहीको प्रकाश किहे है अरु तिनमें मिलिरह्यो है अरु श्लोकन के बीचबीच कहीं कहीं भिन्नहूहै परिपूर्वापरमें और और अक्षर परिगये हैं ताते महेश केवल रामनामही दुइ अक्षरलै लियो है सो भजनहेतु केवल अरु निशिरामनाम महेशजपते हैं अरु जहां श्रीमद्रामायण होत है तहां अवश्य करिकै सुनते हैं यह प्रसिद्ध है अरु सबही श्लोक संयुक्त रामनाम लीन्ह्यो है महादेव केवल रामनाम लीन्ह्यो है (१९) शिवजी अमङ्गल बेषकिये हैं पर राम नामके प्रतापते मङ्गलराशिही अरु अबिनाशी है ताते जिनके केवल रामनामही आधार है सो कैसहूरहै मङ्गल रूप ही है (२०) शुकसनकादि इत्यादिक नामके प्रतापते ब्रह्मसुख भोगी हैं (२१) रामनामके प्रभाव को नारदजान्योहै सम्पूर्णजगत् को हरिहर प्रियहैं अरु दोऊजनको नारदप्रिय हैं (२२) रामनाम प्रह्लाद जपेउ है ताते रामप्रसादते प्रसादकही प्रसन्नताते भक्तशिरोमणि भयेहैं (२३) पुनि ध्रुवजी ग्लानिसंयुक्त नामजपेउ है एकबार ध्रुवजी पांचबर्ष पूर्णअवस्थाभई है कोईसमयमें पिता जोहैराजा उत्तानपाद ताकीगोदमें बैठबे को चले तहां छोटीरानीको नामसुरुचि सो राजा के पासबैठीरहै सोध्रुवजीसों कहतीभई हेध्रुव अबैतुम राजाकी गोदमें बैठबेयोग्य नहींहौ जाइकै तपकरहु भगवान्से बरमांगिकै हमारेगर्भमें उत्पन्नहोहु तबराजाकी गोदमेंबैठो यहबचन सुनिकै राजानहींबोल्यो रानी के बशरह तब ध्रुवजी ग्लानिमानिकै अपनी माता के पासगये माताकोनाम सुनीति तबमाता पूंछतीभई ध्रुवजीसबसमाचार कहि गये तबमाता शोचसंयुक्त कहती है हे पुत्र आपुमत शोचकरौ हमारो समय ऐसही है तब ध्रुवजी कहा हे मातु जेहि भगवान् के हेतु तप करिबे को कहेउ सोभगवान् कैसो है अरु कहां है तबमाता बोलतीभई हे पुत्र भगवान् कोटिनकंदर्पकी शोभाते अधिक है अरु जेहिको चक्रवर्तीराजा राज्य छोंड़िकै भजतहैं अरुमुनीश्वर परमहंस इत्यादिक विज्ञानीभजते हैं अरु जेहि भगवान्की भृकुटीकी एकबिलासमें कोटिन ब्रह्माण्ड उद्भवस्थिति लय

हरहरिप्रियआपू २२ नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू भक्तशिरोमणिभेप्रहलादू २३ ध्रुवसगलानिजपेउहरिनामू पायउअचलअनूप

होते हैं अरुइनराजन की कौनगतिहैअरु वहभगवान् सर्वत्रपरिपूर्ण है जल थल नभ देशकालचर अचरमें पूर्ण है अरु सबको साक्षीरूप सबको चैतन्यकर्त्ता सबकोकर्मफलप्रदाता सबको प्रेरक सबके परेहैं तब ध्रुवजी कहा हम वाहीप्रभु को भजन करहिंगे यह संकल्पकरिकै तब तपहेतु चलतेभये माताने बहुतप्रकार समुझायो ध्रुवजी नहीं मान्यो तब राजा सुनेउ कि ध्रुवजी वनको जातेहैं तब राजाने ध्रुवजीको बहुतप्रकार बुलायोकिराज्यलेहिंफिरि आवहिं तब ध्रुवजी विचारकीन्ह कि देखौ तौ मैंने अबहीं भगवान् को नहीं जान्यो घरते निकसतमात्र राज्य मिलती है प्रभुबड़े सामर्थ्य हैं यह जानकै नहीं फिर्योतब कछुदूरि में नारदजीमिले ध्रुवजीसों बोलतेभये चलो हम तुमको राज्य दिवाइदेहिं अरु तुम बालकहौ वनमें तुम्हारी रक्षा कौन करैगो तब ध्रुवजी बालतेभये हे महामुनि श्रीनारदजी राज्य को मैं नहीं चाहौं अरु मेरीरक्षा सोई पुरुषकरैगो जो सबजगत् की रक्षा करतु है अरु जो दशमास गर्भ में रक्षाकियो है सो इहां हमारी रक्षाकरैगो तब नारदजी प्रसन्नह्वैकै परमेश्वर को नाम उपदेशकरतभये ध्रुवजी दृढ़ करिकै जपतभये षट्मासमें भगवान् प्राप्तभये पुनि अचल अनूपम ठाउ पायउहै इतिप्रसंगे श्रीभागवते (२४) पुनिरामनाम अतिपावन कर्त्ता ताको सुमिरिकै श्रीहनुमान्जोहैं ते श्रीरामचन्द्रको अपनेवशकरिराख्यो है (२५) पुनि अजामिल गज गणिका अपरकहे कोलकिरात भिल्ल यमनइत्यादिक नामके प्रभावते शुद्धह्वैकै परमपदको प्राप्तभये हैं पुनि येते सब विवशह्वैके नाम उच्चारणकियो है ते श्रीरामचन्द्र को प्राप्तभये हैं अरु जो प्रीति सों नाम उच्चारणकरै है सो तो श्रीरामचन्द्र को प्राप्तही है यामें कौन आश्चर्य है प्रमाण वाराहपुराणे शिववाक्यं॥ दैवाच्छूकरशावकेननिहतो म्लेक्षोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितो जल्पंस्तनुत्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसि कास्तेयांतिरामास्पदं १ पुनि श्रुतिप्रमाण है यश्चांडालोरामेतिवाचंबदेततेनसहसं वदेत्तेनसहसंभूंजीयात् (२६) कहँलगि रामनाम की बड़ाई मैं करौं श्रीरामचन्द्र जो अपनो रामनाम ताकी महिमा कहा चाहैं तो नहींकहिसकैं हैं इहां व्यंग्यस्तुति अलंकार है जैसे कोई राजा को कहै कि आप तो कृपिणहो पर तुम्हारो प्रताप एसो है जो कोई तुम्हारोनामलेइ तो बन में सिंह नहीं बोलिसकै है अपर की का चली है तब यह

मठामू २४ सुमिरिपवनसुतपावननामू अपनेबशकरिराखेउरामू २५ अपरअजामिलगजगणिकाऊ भयेशुद्धकरिनामप्रभाऊ २६

सुनिकै राजा मन में वहुत प्रसन्नभयो तैसे गुसाईं तुलसीदास जी यहकहिकै श्रीरामचन्द्र को प्रसन्नकरिदीन्ह जो यह अलंकार जानै सो यह चौपाई को अर्थ जानैगा प्रमाण हनुमन्नाटके रामत्वत्तोधिकंनाम इतिमन्यामहेवयं त्वयैकातारितायोध्या नाम्नातुभुवनत्रयं १ यह व्यंग्यस्तुति है पुनि दूसरअर्थ जो श्रीरामचन्द्र कोई जीवपर कृपाकरहिं तब उसको प्राप्तहोइ तव वह कृतार्थहोइ किंतु जव श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको ध्यान करै पर समस्त इन्द्रिन की विषय मनकी वृत्तिमें लीनकरै पुनि मनकीबृत्ति जो स्थूलसूक्ष्मसो वुद्धि में प्रवेश करिकै निश्चय करै वुद्धिकी निश्चय चित्तकी वृत्ति में लीन करिकै चित्त की वृत्ति आत्मा विषे लीनकरिकै समाधानको प्राप्तहोइकै तब श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में अखण्ड तैलवत्धारा समाधिवँधै तव जीव श्रीरामचन्द्रको प्राप्त होइ अरु रामनाम कोऊ कहै कहूं कहै कैसेहु कहै ते सब श्रीरामचन्द्रको प्राप्तहोतेहैं तहां प्रमाण हिरण्यगर्भसंहितायां अगस्त्यवाक्यंश्लोक द्वै॥ श्रीरामेतिपरंमन्त्रंतदेवपरमंपदं तदेवतारकंविद्धिजन्ममृत्युभयापहं १ श्री रामेतिवदंब्रह्म भावमाप्नोत्यसंशयं तत्त्वविद्यार्थिनोनित्यंरमंतेचित्सुखात्मनि २ ताते रामनाम की महिमा वेदस्मृति शास्त्र पुराण देवता मुनि इत्यादिक नहींकहिसकैं अरु जेती महिमा रामनाम की वेदकहतु हैं तित नी जीवन को नहीं समुझिपरै है अरु जो श्रीरामचन्द्र जी आपुही अपने नाम की महिमा श्रीमुखते कहहिं तो कौन समुझै है ताते श्रीरामचन्द्र अपनेनाम की महिमा नहीं कहिसकते हैं अरु श्रीरामचन्द्र अपने राम नाम को अर्थ प्रभावगुण स्वरूप सम्पूर्ण आपुही जानते हैं पर कहिनहिं सके अपर कौन जानिसकै है काहेते कि रामनाम रामस्वरूप एकही है ताते अपनोरूपगुण प्रताप नामनहीं कहते हैं और सववेदादिक वर्णते हैं तहांप्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं द्वैश्लोक॥ वेदाः सर्वेतथाशास्त्राः मुनयोनिर्जरर्षभाः नाम्नःप्रभावमृत्यु ग्रंतेनजानंतिसुव्रते १ रामएवाभिजानंतिकृत्ण्णंनामार्थमद्धुतं ईषद्वदामि नामार्थदेवितस्यानकंपया (२७)॥ दोहार्थ॥ न्यूनाधिकारूपकालंकारकहते हैं रामनाम अरु कल्पतरुको तदात्मक अंगकहते हैं मूल श्रीरामस्वरूप है रकार अकारत्रयस्कंध है रेफरेफ की अकारदीर्घ अकार मकार की अकार हलमकार पंचशाखा हैं चारिहू मुक्तित्त्व कहै षटशरणागत संयुक्तनवधाभक्तिपरण है कृपाकरुणादया

कहँलगिकरौंमैंनामवड़ाई रामनसकहिनामगुणगाई २७॥दो०॥ रामनामकोकल्पतरुकरकल्याणनिवास जेहिसुमिरेभयोभागतेतुलसीतुलसीदास २८ चहुंयुगतीनिकालतिहुंलोका भयेनामजपिजीवविशोका २९ वेदपुराणसंतमतएहू सकलसुकृतफलराम

सौंशील्यादिक परमदिव्य अनन्त गुण फूलहैं प्रेम लक्षणरसरूपही फलहै पराभक्तिस्वादपुष्टी है उतकल्पतरु अर्थधर्मकाम त्रैफलदातानाम कल्पतरुजो है सो श्रीराम अर्थ धर्म काम भुक्ति मुक्ति भक्ति सदानित्यसर्वकाल सवकोदाताहै वह सवअनित्य है यह सवनित्य है अरुसंपूर्ण कल्याणकोकारक है कर्त्ता है काहेतेकि सम्पूर्ण कल्याण को निवास कहे स्थान है रामनाम हनुमन्नाटकेश्लोक कल्याणानांनिधानंकलिमलमथनं पावनंपावनानांपाथे यंजन्ममुक्षोः सपदिपरपदप्राप्तयेप्रस्थितस्य विश्रामस्थनामेकंकविवरबचसांजीवनं-सज्जनानां वीजंधर्मद्रुमस्यप्रभवभवतांभूतयेरामनामः १ गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि जेहि रामनाम के सुमिरे ते मैं भाग्यते तुलसीदास भयों तुलसी प्रभुको अतिप्रिय हैं तेहिको मैं दासभयों यह तुल्य योग्यता लंकार है किंतु जेहि रामनाम के सुमिरे ते नामके भाग में भागीभयों तुलसीकहै तुल्य योग्यता ऐसी दासत्व को प्राप्तभयों श्रीरामचन्द्र के तुल्यदास तुल्य योग्यभयो अथवा वृन्दानामे जलंधरकी स्त्री सो नाम हीके प्रभाव ते तुलसीरूप दासत्वको प्राप्तिभई तुलसीदास जी कहते हैं (२८) चारिहूंयुग में तीनिहूंकाल में तीनिहूंलोक में रामनाम के प्रभाव ते जीव विशोक होते हैं जन्म मरणरूप शोक ताते रहित होते हैं (२९) पुराण को सिद्धान्त अरु शास्त्रवेद को सिद्धान्त अरु सन्तनकोअनुभव सिद्धान्त विशेष येही है जेते सुकृत हैं योग वैराग्य शुभकर्म कांड शुभज्ञान कर्मकांड शुभ निजसउपासनाकांड इत्यादि सुष्टकृत हैं पर सबको फल रसमय राम ये जो दूनोंवर्ण हैं तिनमें स्नेह सर्वभाव ते एकरस में करना (३०) प्रथमयुग सतयुग तामें नाम को जपै अरु प्रभुके स्वरूपको ध्यानकरै तब जीव

कृतार्थहोहि अरु त्रेतायुगविषे नामजपै अरु सात्विकीयज्ञकरै प्रभुको समर्पणकरै तब जीव कृतार्थहोहि अरु द्वापरयुगविषे नाम जपै अरु प्रभुके पद पूजनकरै प्रभुको समर्पणकरै तब प्रभुको परितोषहोइ तब जीव कृतार्थहोइ (३१) अरु कलियुग जो है सो केवल मल जो है पाप तेहिको मूल है ताते मलीन ह्वै रह्यो है तहां पायस समुद्रवत् भरिरह्यो है तहां जन जो है प्राणी तिहुको मनमीन ह्वै रह्योहै नहीं भिन्न ह्वै सकै है जलमीनइव (३२) तेहि कलिकाल कराल बिषे

सनेहू ३० ध्यानप्रथमयुगमखबिधिदूजे द्वापरपरितोषकसमपूजे ३१ कलिकेवलमलमूलमलीना पापपयोनिधिजन मनमीना ३२ नामकामतरुकालकराला सुमिरत शमनसकलजगजाला ३३ रामनामकलिअभिमतदाता हितपरलोकलोकपितुमाता ३४ नहिं

रामनाम कल्पतरु है सम्पूर्ण शुभकामना को दाता है ताते राम नामके सुमिरतसन्ते सम्पूर्ण जो है जगजाल सो समस्त शमन कही नाशहोइ जातु है अथवा पापरूप समुद्र में मनरूप मीन ताको निकासि लेतु है जैसे कोई सागर में जाल परै है सो मीन इत्यादिक जलके जीव सबको निकासिलेतु है तैसे कोई राम नामकहै जो सुनैं जो सुमिरै जो बिचारै अरु रामनाम उच्चारणकरै जहांतक शब्दसुनिपरै सो सर्बजीवको मनसंसारसागरते निकसिजातु है काहे ते रामनाम महाजाल है (३३) रामनामचारिहुयुग में अभिमत कहे बांछित आनन्द मोक्षदाता है पर कलियुग में विशेष एक रामनामही मोक्षदाता है अपर हईनहीं है अरु परलोकको हितकारी एकरामनामही है अरु लोकमें हितकरिबेको उज्ज्वलयश शरीर को पालन रक्षा इत्यादिक सोकरिबेको परम हितकारी पितामाता समान हैं ताते परलोक अरु लोक दोउनमें निर्मल फलदाता रकारपितारूप मकारमातारूप जीव पुत्ररूपहै (३४) यहजो कलिकाल है तामें न कर्मको विवेक है यज्ञ दान तपादिक अरु न धर्मको विवेक है बर्णाश्रमधर्म इत्यादिकवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ब्राह्मणको कर्म धर्म समदृष्टि किन्तुसमकहे चित्त बुद्धि मन अहंकार इनकीबृत्ति कामना बिषेनचलै सो सम कही ब्राह्मणको एकगुण पुनि दम पांचज्ञान इन्द्रीलक्षिकरना पुनि ज्ञानचराचर में ब्रह्मभाव करना पांचकर्म इन्द्रीतिनकी विषयरोंकिदेना पुनि तपकरना पुनि शौचत्रिकाल स्नानादिक पुनिशांति निन्दास्तुति सहिजाना पुनि आर्जवकहे करुणादया पूज्यमान पुनि ज्ञानसारासार को जानना अपने स्वस्वरूपकी पुनि आस्यमानआशीष शापकी सामर्थ्ययेतेनव ब्राह्मण में स्वाभाविक चाहिये पुनि क्षत्रीके कर्मषट् दानतप में शूरतेजस्वी सव कोई डरै धैर्य्यमान सबप्रकारते सावधान दक्षकहे शास्त्रवेत्ता शास्त्रविधिनीतिकरना युद्ध में अचलता वेदविधि दानकरिकै ईश्वरार्प्पण ये षट्क्षत्रीके स्वाभाविक धर्म हैं वैश्यकेधर्म कृषी बाणिज्य गऊ को सेवन शूद्रतीनिहूबर्णकी सेवाकरै प्रमाण भगवद्गीतायां श्लोकतीनि॥ शमोदमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेवच ज्ञानविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजं १ शौर्यतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनं दानमीश्वरभावश्च क्षात्रंकर्मस्वभावजं २ कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजं परिचर्य्यात्मकंकर्म शूद्रस्यापिस्वभावजं ३ पुनि आश्रमकर्म धर्म ब्रह्मचारी विद्याध्ययन स्वहस्तभोजन गुरुआज्ञाकरना गृहस्थको कर्म जो धन उत्पन्न करै कोई यत्न से तामेंअठारह भागमें एकभाग तुरन्त पुण्यकरदेइ अरु सत्रह भाग में गृहस्थी करै अतिथि सेवन नात कुटुम्ब सेवन अरु पितृका नित्य नित्य तर्पणश्राद्धकरै देवऋण यज्ञकरै ऋषि ऋण तीर्थ व्रत दान ये तीनि ऋणते तब छूटै अरु नित्य पंचबलि बैश्यकरै इन्द्रबरुण कुवेर धर्मराज अग्नि इनकेहेतु अरु पंचदेवता की पूजनकरै विष्णु शिव देवी गणेश सूर्य्यपूजिकै बिष्णुते मुक्तिमांगे किंतु जो गुरु इष्टवतावे सोईपूजनकरै पुनि बाणप्रस्थको कर्म जो ब्रह्मचारीबिवाहकरै पुनि बाणप्रस्थलेइ तब बनमेंजाइके स्त्री संयुक्त तपकरै किंतु ब्रह्मचर्यही ते बाणप्रस्थलेइ बनजाइ तपकरै पुनि संन्यासकर्म सो दुइप्रकार को एक वैष्णव एकशैव ते द्वौदण्ड ग्रहणकरिकै कहूं दुइराति नहींटिकै ग्राम में नहींजाहि रात्रि को भोजन धातु बाहन को त्याग ब्रह्मनेष्ठी वेदवेत्ता बैराग्यमान बाह्यांतर इन्द्रीजितपुनि संन्यास में दुइभेद एक बिविदिषा संन्यास जो कहि आये हैं कछुकर्म वेद आज्ञालिहे है अरु एक बिहित संन्यास परमहंस दशा इत्यादि वर्णाश्रम कर्म धर्म बहुत हैं पुनि भक्ति श्रवण कीर्त्तन स्मरण पादसेवन अर्चन बन्दना दास्यसख्य आत्मसमर्पण ये नवधाभक्ति अरु प्रेमा पराये दुइसुतन्त्रा भक्ति हैं साधन रहित हैं केवल राम कृपारूप हैं येते सब कर्म धर्म योगबैराग्य ज्ञान भक्ति इनसबन को विवेक

कलियुग में नहींहोसके है केवल एक राम नाम यह कलियुग में जीवन को अवलम्बन है सर्ब कल्याणहेतुइत्यर्थः प्रमाण बाल्मीकीये भूषणटीकायां रामेतिबर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजन्तुः कलौयुगेकल्मषमानसाना मन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः (३५) कलि जो है कपट को निधान कही स्थान सोई कालनेमि राक्षस है अरु राम नाम सुमतिमान सामर्थ्य हनूमान जू हैं ताके नाशकरिवेको (३६) दोहार्थ॥ पुनि रामनाम श्रीनृसिंहजू हैं अरु कलिकाल जो है सो हिरण्यकशिपु है अरु रामनामके जापक जे हैं ते प्रह्लादजू हैं जैसेप्रह्लाद के हेतु श्रीनृसिंहजू हिरण्यकशिपु जो देवतनको शालतरह्यो है ताको मारिडारयो है तैसे जो राम नाम जपै ताके जेते कलि के कपटइत्यादिक ब्यकार हैं सो समस्त नाशकरिदेतु है अरु सन्तजन सुरमुनि हैं तिनको पालनकरैहै जरूर राम नाम ऐसो है बहुत का कहौं रामनाम कल्याण को स्थान है आधार है अरु भुक्ति मुक्ति ज्ञानभक्ति इत्यादिक सर्व कल्याण सो आधेय है पर एकरस सम्पूर्ण अरु सर्वयुग कर्बकाल सर्बदेशमें सर्वजीवन को सर्ब कल्याणकर्त्ता एक राम नामही है ब्रह्मानन्द परमा-

कलिकर्मनभक्तिविवेकू रामनामअवलंबनएकू ३५ कालनेमिकलिकपटनिधानू नामसुमतिसमरथहनुमानू ३६॥ दो० राम नामनरकेहरी कनककशिपुकलिकाल जापकजनप्रह्लादजिमिपालिहिदलिसुरसाल ३७॥

भायकुभायअनखआलसहूं नाम जपतमंगलदिशिदशहूं १

नन्द रूप है तहां प्रमाण है श्रीहनुमन्नाटके श्लोक एक ॥ कल्याणानांनिधानं कलिमलमथनंपावनंपावनानां पाथेयंयन्मुमुक्षोःसपदिपरपदप्राप्तये प्रस्थितस्य विश्रामस्थानमेकंकविवरवचसांजीवनंसज्जनानां वीजंधर्मद्रुमस्यप्रभवतुभवतांभूतयेरामनामः १ तहां यह श्रीगुसाईं तुलसीदास पुकारिकै कहते हैं कि सर्बकाल में उपायशून्यहोइ कै रामनामजपहु अन्यश्लोक। तदेवलग्नंसुदिनंतदेव तारावलंचन्द्रवलंतदेव। विद्याबलंदैववलंतदेव सीतापतेर्नामयदास्मरामि १ ताते रामनाम सर्बकालमें विर्विघ्नमंगलकर्त्ता है (३७) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुष विध्वंसने बालकाण्डे श्रीसीतापति रामनामसर्वोपरि वर्णनंनाम अष्टमस्तरंगः ८॥ :: :: ::

दोहा॥ नवतरङ्गमेंनामफल रामकृपाषट्शरण रामचरणसौंशील्यरस सतमहात्मदुखहरण ९ रामनामभावसमेत जपै किन्तु अभाव समेत जपै किन्तु अनखकहे ईर्षासमेत जपै किन्तु आलस कहे जम्भुवातसन्तेकिन्तु आलस कहे सब प्रकार हारिकै आसक्त होइकै रामनाम कैसहूंजपै दशहूं दिशामें मंगलहोइहै पश्चिम बायव्यकोण उत्तरईशानकोण पूर्वअग्निकोण दक्षिणनैऋत्यकोण अरु ऊद्ध्वंदिशा आकाश पुनि अर्द्धदिशा पाताल येते दशदिशा ताकेदेवता दशक्रमहीते जानव वरुणवायु कुबेरशिव इन्द्र अग्नि यम निऋति आकश को देव आकाशही है किंतु कोई मुनि वाक्य है आकाश को देवता शिवभगवान् है पवनतत्त्वको देवताअनन्त जोभगवान् शेषहै अरु अग्नितत्त्व को देव सूर्यभगवान् है जलकोदेव वरुणभगवान् है महितत्त्वको देवता बाराह भगवान्है अरु पातालकोदेव अष्टकुलीनाग भगवान्है येते दशदेवता दशदिशाके अरु तीनिगुण देवता संयुक्त रामनाम जपतसन्ते मंगल करते हैं अथवा दशदिशा पांच ज्ञानइन्द्रीश्रोत्रत्वक् चक्षु रसना घ्राण पुनि पांच कर्मइन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा येते दशइन्द्री दशैदिशा तिनके देवता क्रमहीते जानब आकाश देवता श्रवणको ताको विषयशब्द त्वक्को पवन देवविषय स्पर्श चक्षुको देव सूर्य विषयरूप जीभ को देव बरुण विषयरस नासिका को देवता अश्विनी कुमारसूर्यकेपुत्र ताकी विषयगन्धि मुखको देव अग्नि विषय भक्षण हाथकेदेव इन्द्र विषय व्यवहार पगको देव यज्ञ विष्णु विषय चलन लिङ्गको देवप्रजापति दक्ष विषय मैथुन गुदाको देव यमराज विषय विसर्ग येते दश दिशा अरु ताके देवता समस्त परम दिव्य मङ्गल करते हैं रामनामकेजपेते सो प्रह्लाद में देखिलेव॥ प्रमाण नृसिंहपुराणे प्रह्लादवाक्यंपितरं प्रति श्लोक एक॥ रामनामजपतांकुतोभयं सर्वतापशमनेकभेषजं यस्यतातममगात्रसन्निधौ पावकोऽपिसलिलायतेऽधुना (१) ऐसेहीबाल्मीकि ध्रुव इत्यादिक भये भावते रामनाम किनने जपेउहै प्रह्लाद विभीषणइत्यादिक जे ऐसे दुष्टनकी संगति में रामनामके प्रतापते भक्तराज भये रामनाम

की दृढ़ताते अरु कुभावते हिरण्यकशिपु रावण इत्यादिक नामकहे हैं ते कृतार्त्थ भयेहैं अरु अनखते शिशुपाल इत्यादिकनाम कहे हैं तेऊ कृतार्त्थभये हैं अरु अलसाइ कहे हारिकै आसक्तहोइकै आरतसंयुक्तद्रौपदीगज इत्यादिक ते सब लोक परलोकहूं में मङ्गलमय भये हैं ताते रामनामकै सहूजपै सो मङ्गलमय है यह ध्रुवकरिकै निश्चय है अरु जोभावते नामजपै है तिनने दशनामापराध बचाइकै जपे हैं नामापराध कौन है शिव विष्णुमें भेदकरै कोई ईश्वर तत्त्वमानिकै किन्तु ईश्वरकोटीमानिकै शिव बिष्णु में अभेद करते हैं अरु कोई जो उपासक हैं किन्तु मतबादी हैं तेऊ बिष्णु को भगवत् मानिकै शिवको भागवत् मानिकै अभेद करते हैं॥ प्रमाणभागवते॥ वैष्णवानांयथाशम्भुः ताते भगवत् भागवत् अभेद है तहां प्रमाण है॥ अन्यच्चश्लोकार्द्ध॥ श्रीमद्रामस्वरूपतोजनवपुर्भिन्नंनजातंक्वचित् मीनाद्यारघुनाथयादवपतिः सर्वेऽवतारायथा १ ताते शिवको भगवत् अत्यन्त प्रिय है अरु भगवत् को शिव अत्यन्त प्रिय है ताते द्वौ अभेद है पुनि प्रमाण हरिवंशेब्रह्मणोक्तं श्लोक डेढ़ रुदोविष्णुःप्रविष्टस्तु विष्णुरेवयथाभवेत् विष्णुरुद्रप्रविष्टस्तु रुद्रएवतथाभवेत् तस्मादेकत्वमापन्नौ रुद्रयेंद्रौचतावुभौ १ ताते शिवविष्णुः में भेद नहीं है अरु भगवत् के नामरूप एकहीहै तहां शिवजी केवल भगवत्नामरूप अपरकर्म जानतेनहीं ताते कीटभृङ्गके न्यायकरिकै शिव विष्णु में अभेद है जोईरीति सों जो जानै सोई रीति सों विष्णु में शिव में अभेद मानै तब नामापराध मिटै नामापराध शिव विष्णुमें भेदकरै १ पुनि वेदनिन्दा २ अस सन्त कैसहू होइ तिनकी निन्दाकहैं लघुताकरना ३ पुनि नाम के बल ते पापकरना कि हम केतेऊ पाप करैंगे नाम जपैंगे मिटिजाइगो ४ पुनि श्रद्धा हीन को नाम उपदेश करना ५ पुनि मुक्ति के साधन अनेक हैं तिन सबन को नाम की बराबरि जानै सो अपराध ६ पुनिनामके माहात्म्य में मिथ्याबुद्धि करना ७ पुनि नामके माहात्म्यमें विश्वासनहीं आवत है ८ पुनि गुरुको

निरादर ९ पुनि नामके माहात्म्य में अपरकल्पना कल्पनाकहे यह मनमें ल्यावत हैं कि जो नामकहेते मोक्ष है तौ सबैप्राणी नाम कहते हैं तौसबै मोक्षमानहैं किंतुयह मन में ल्यावत हैं कि नाम अपर साधनसहित मुक्तिदाता है १० येतेदश नामापराध हैं जो हरि अपराध होइ तौ नाम के जपेते मिटिजात है अरु जो जानिकै नामापराधकरै सोकितनौ नामजपैफलीभूतनहींहोत है अरु अजान नामापराधहोइ तौ परमेश्वर के स्वरूप में मनआवेश करिकै प्रेमसमेत आर्त्तिसंयुक्त नामउच्चारणकरै तौ नामापराध मिटिजात है परपुनि नामापराध न करै तब परमेश्वर को नाम कोटिनजन्म के संचितकर्म शुभाशुभ सो नाशकरिदेत है मोक्षकरतु है तातेजे भावसमेत नामजपते हैं नामापराध बचाइकै तेसारूप्य सामीप्यमुक्ति को प्राप्तहोते हैं अरु जे कुभावते किंतु अनख ते परमेश्वर के नाम मुख ते निकसते हैं अरु कहते कहते शरीर पातहोइजाइ तबते कैवल्य मुक्ति को प्राप्तहोते हैं अरु उनको नामापराधको ज्ञाननहीं है अरु जे आलस आसक्त आरत ते अपनी रक्षाहेतु नाम उच्चारण करते हैं ते सालोक्यमुक्ति को प्राप्त होते हैं उनको भी नामापराध की सुधिनहीं है (१)